INFUSION NOTES

WHEN ONLY THE BEST WILL DO

LATEST EDITION

राजस्थान महिला ASI 2023

(सहायक उपनिरीक्षक)

HANDWRITTEN NOTES

PART-2 राजस्थान का इतिहास + कला एवं संस्कृति

INFUSION NOTES

WHEN ONLY THE BEST WILL DO

राजस्थान महिला ASI

(सहायक उपनिरीक्षक)

भाग – 2

राजस्थान का इतिहास + कला एवं संस्कृति

प्रस्तावना

प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स ***"राजस्थान महिला ASI (सहायक उपनिरीक्षक)"*** *को एक विभिन्न अपने अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है / ये नोट्स पाठकों को* ***राजस्थान लोक सेवा आयोग (RPSC)*** *द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा* ***"राजस्थान महिला ASI (सहायक उपनिरीक्षक)" की*** *परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगें* ***/***

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स में कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती हैं / अतः आप सूचि पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं/

प्रकाशकः

INFUSION NOTES

जयपुर, 302029 (RAJASTHAN)

मो : 9887809083

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : http://www.infusionnotes.com

Whatsapp करें - https://wa.link/2iclos

Online order करें - https://bit.ly/asi-woman

मूल्य : ₹	संस्करण : नवीनतम

राजस्थान का इतिहास

1. राजस्थान इतिहास के स्रोत	1
2. प्रागैतिहासिक स्थल (सभ्यताएं)	16
3. ऐतिहासिक (केंद्र)	26
4. प्रमुख राजवंशों के महत्वपूर्ण शासकों की राजनीतिक एवं सांस्कृतिक उपलब्धियां	33
5. मध्यकालीन राजस्थान में प्रशासनिक तथा राजस्व प्रणाली	96
6. स्वतंत्रता आंदोलन (1857 का स्वतंत्रता संग्राम)	108
7. राजनीतिक जागृति	117
8. एकीकरण	123
9. राजस्थान में किसान एवं जनजाति आंदोलन	128
10. प्रजामण्डल आंदोलन	140

कला संस्कृति

1. वास्तुकला की मुख्य विशेषताएँ	155
• किले और स्मारक (छतरियाँ)	
• राजस्थान की प्रमुख हवेलियाँ	

• प्रमुख महल	
2. चित्रकला	179
3. हस्त कला (हस्तशिल्प)	190
4. राजस्थानी साहित्य की महत्त्वपूर्ण कृतियाँ	199
5. राजस्थान की भाषा व राजस्थान की बोलियाँ	208
6. वेशभूषा एवं आभूषण	214
7. मेले एवं त्यौहार	217
8. राजस्थान के लोकसंगीत (लोकगीत)	231
9. राजस्थान के प्रमुख लोक नृत्य एवं लोक नाट्य	241
10.राजस्थानी संस्कृति परम्पराएं और विरासत प्रथाएं	259
11. राजस्थान के धार्मिक आंदोलन प्रमुख संत सम्प्रदाय	265
12.राजस्थान के लोक देवता एंव लोक देवियाँ	275
13.महत्त्वपूर्ण पर्यटन स्थल	287
14.राजस्थान के प्रमुख व्यक्तित्व	290

राजस्थान का इतिहास

अध्याय – 1

राजस्थान इतिहास के स्रोत

- ***राजस्थान इतिहास को जानने के स्रोत :-***
  इतिहास का शाब्दिक अर्थ है – "ऐसा निश्चित रूप से हुआ है"। इतिहास के जनक यूनान के हेरोडोटस को माना जाता है लगभग 2500 वर्ष पूर्व उन्होंने "हिस्टोरिका" नामक ग्रन्थ की रचना की । इस ग्रन्थ में उन्होंने भारत का उल्लेख भी किया है ।
  भारतीय इतिहास के जनक मेगस्थनीज माने जाते हैं ।
  महाभारत के लेखक "वेदव्यास" माने जाते हैं। महाभारत का प्राचीन नाम "जय सहिंता" था।
- राजस्थान इतिहास के जनक "कर्नल जेम्स टॉड" कहे जाते हैं । वे 1818 से 1821 के मध्य **मेवाड़ (उदयपुर) प्रान्त के पॉलिटिकल** एजेंट थे उन्होंने घोड़े पर घूम-घूम कर राजस्थान के इतिहास को लिखा। अतः कर्नल टॉड को **"घोड़े वाले बाबा"** कहा जाता है। इन्होंने "एनल्स एण्ड एंटीक्विटीज ऑफ राजस्थान" नामक पुस्तकालय का लन्दन में 1829 में प्रकाशन करवाया।
- गौरीशंकर हीराचन्द ओझा (जी.एच. ओझा) ने इसका सर्वप्रथम हिन्दी में अनुवाद करवाया। इस पुस्तक का दूसरा नाम "सेंट्रल एण्ड वेस्टर्न राजपूत स्टेट्स ऑफ इंडिया" है ।
- कर्नल जेम्स टॉड की एक अन्य पुस्तक "ट्रेवल इन वेस्टर्न इण्डिया" का इसकी मृत्यु के 1837 में उनकी पत्नी ने प्रकाशन करवाया।
- अभिलेख एवं प्रशस्तियाँ को पत्थर या धातु की सतह पर उकेरे गए लेखों को अभिलेख में सम्मिलित किया जाता है।
- अभिलेखों में शिलालेख, स्तम्भ लेख, मूर्ति लेख, गुहा लेख आदि को सम्मिलित किया जाता है ।
- तिथि युक्त एवं समसामयिकी होने के कारण पुरातात्विक स्रोतों के अन्तर्गत अभिलेख सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण हैं।
- प्रारम्भिक अभिलेखों की भाषा संस्कृत थी जबकि मध्यकाल में इनमें उर्दू, फारसी व राजस्थानी भाषा का प्रयोग भी हुआ।
- अभिलेखों के अध्ययन को **एपिग्राफी** कहा जाता है।
- भारत में प्राचीनतम अभिलेख सम्राट अशोक मौर्य के हैं जिनकी **भाषा प्राकृत एवं मगधी तथा लिपि ब्राह्मी मिलती है।**
- शक शासक रुद्रदामन का जूनागढ़ अभिलेख भारत का पहला संस्कृत अभिलेख है।
- राजस्थान के अभिलेखों की मुख्य भाषा संस्कृत एवं राजस्थानी है तथा इनकी लिपि महाजनी एवं हर्ष लिपि है।
- फारसी भाषा मे लिखा सबसे पुराना लेख अजमेर के अढ़ाई दिन के झोंपड़े की दीवार के पीछे लिखा हुआ मिला है। यह लेख लगभग 1200 ई. का है।

अशोक के अभिलेख :-

- मौर्य सम्राट अशोक के दो अभिलेख भाब्रू अभिलेख तथा बैराठ अभिलेख बैराठ की पहाड़ी से मिले हैं।
- भाब्रू अभिलेख की खोज कैप्टेन बर्ट द्वारा बीजक की पहाड़ी से की गई। इस अभिलेख से अशोक के बौद्ध धर्म के अनुयायी होने तथा राजस्थान में मौर्य शासन होने की जानकारी मिलती है।
- अशोक का भाब्रू अभिलेख वर्तमान में ***कलकत्ता संग्रहालय*** में सुरक्षित है।

बड़ली का अभिलेख :-

- यह राजस्थान का सबसे **प्राचीनतम अभिलेख** है। 443 ई. पूर्व का यह अभिलेख अजमेर के बड़ली गाँव के भिलोत माता मंदिर से पं. गौरीशंकर हीराचन्द ओझा को प्राप्त हुआ।
- वर्तमान में यह ***अजमेर संग्रहालय में सुरक्षित है।***

बसंतगढ़ अभिलेख (625 ई.):-

- राजा वर्मलात के समय का यह अभिलेख बसंतगढ़ (सिरोही) से प्राप्त हुआ है।
- इससे अर्बुदांचल के राजा राज्जिल तथा उसके पुत्र सत्यदेव के बारे में जानकारी मिलती है।
- इसका लेखक द्विजन्मा तथा उत्कीर्णकर्ता नागमुण्डी था।
- दधिमति माता अभिलेख के बाद यह पश्चिमी राजस्थान का सबसे प्राचीन अभिलेख है।

- *इस अभिलेख में सामन्त प्रथा का उल्लेख मिलता है।*
- *शिलालेख में मेवाड़ के गुहिल वंश शासक शिलादित्य का उल्लेख है।*

मानमोरी का अभिलेख :-

- *713 ई. का यह अभिलेख मानसरोवर झील (चित्तौड़गढ़) के तट पर उत्कीर्ण है।*
- *इस अभिलेख में इसके **रचयिता पुष्य** तथा उत्कीर्णकर्ता शिवादित्य का उल्लेख है।*
- *इस अभिलेख से चित्तौड़गढ़ दुर्ग का निर्माण करने वाले चित्रांग (चित्रांगद) के बारे में जानकारी मिलती है।*
- *राजा भोज के पुत्र मान द्वारा मानसरोवर झील के निर्माण करवाये जाने का उल्लेख भी इसमें मिलता है।*
- *यह अभिलेख कर्नल जेम्स टॉड द्वारा इंग्लैण्ड ले जाते समय समुद्र में फेंक दिया गया था।*
- *इस अभिलेख में '**अमृत मंथन**' का उल्लेख मिलता है।*
- *इस अभिलेख में चार मौर्य शासकों (**महेश्वर, भीम, भोज एवं मान**) के बारे में जानकारी मिलती है।*

मण्डौर अभिलेख :-

- *जोधपुर के मंडोर में स्थित 837 ई. के इस अभिलेख में गुर्जर-प्रतिहार शासकों की वंशावली विष्णु तथा शिव पूजा का उल्लेख किया गया है। इस अभिलेख की रचना गुर्जर-प्रतिहार शासक बाउक द्वारा करवाई गई थी।*

बड़वा अभिलेख (238 – 239 ई.) :-

- *यह बड़वा (कोटा) में स्तम्भ पर उत्कीर्ण मौखरी वंश के शासकों का सबसे प्राचीन अभिलेख है। संस्कृत भाषा में लिखित इस अभिलेख से मौखरी शासकों बल, सोमदेव, बलसिंह आदि की उपलब्धियों की जानकारी प्राप्त होती है।*
- *यह 3 यूप पर खुदा हुआ है।*

कणसवा का अभिलेख :-

- *738 ई. का यह अभिलेख कोटा के निकट कणसवा गाँव में उत्कीर्ण है जिसमें मौर्य वंश के राजा धवल का उल्लेख मिलता है।*
- ***राजा धवल को अंतिम मौर्य वंशी राजा माना जाता है।***

आदिवराह मंदिर का अभिलेख :-

- *944 ई. का यह लेख उदयपुर के आदिवराह मंदिर से प्राप्त हुआ है जो संस्कृत में ब्राह्मी लिपि में उत्कीर्ण है।*
- *यह लेख मेवाड़ के शासक भर्तृहरि द्वितीय के समय का है।*
- *इसके अनुसार आहड़ एक धर्म स्थल के रूप में प्रसिद्ध था।*

सुण्डा पर्वत अभिलेख :-

- *जालौर स्थित सुण्डा पर्वत का यह अभिलेख चौहान शासक **चोचिंगदेव** के समय का है जिससे इसकी उपलब्धियों तथा शासन के बारे में जानकारी प्राप्त होती है।*

अचलेश्वर का अभिलेख (1285 ई.) :-

- *यह अभिलेख संस्कृत भाषा में अचलेश्वर मंदिर के पास दीवार पर उत्कीर्ण है इसके रचयिता शुभचंद्र तथा उत्कीर्णकर्ता कर्मसिंह थे।*
- *इस अभिलेख में '**बापा**' से '**महाराणा समरसिंह**' तक की वंशावली का उल्लेख है।*
- *इसमें हारीत ऋषि की तपस्या तथा उनके आशीर्वाद से बापा को राज्य प्राप्ति का उल्लेख है।*

किराडू का लेख :-

- *1161 ई. का यह लेख किराडू के शिव मंदिर में उत्कीर्ण है जिसकी भाषा संस्कृत है।*
- *इस लेख में परमारों की उत्पत्ति ऋषि वशिष्ठ के आबू यज्ञ से बतायी गई है।*
- *इस प्रशस्ति में किराडू की परमार शाखा का वंशक्रम दिया गया है।*

श्रृंगी ऋषि का लेख :-

- *1428 ई. का यह लेख मेवाड़ के एकलिंगजी के पास श्रृंगी ऋषि नामक स्थान पर काले पत्थर पर उत्कीर्ण है, जिसकी भाषा संस्कृत है। इस लेख के रचनाकार '**कविराज वाणीविलास योगेश्वर**' थे एवं उत्कीर्णकर्ता हदा के पुत्र पन्ना थे।*
- *यह महाराणा मोकल के समय का है जिसमें राणा हम्मीर से मोकल तक के शासकों की उपलब्धियों का उल्लेख है।*
- *इस लेख में महाराणा मोकल द्वारा एकलिंगजी मंदिर के चारों ओर दीवार बनवाने तथा नागौर शासक फिरोज खाँ एवं गुजरात शासक अहमद खाँ को युद्ध में पराजित करने का उल्लेख है।*

आर्थूणा के शिव मंदिर की प्रशस्ति :-

- 1079 ई. की यह प्रशस्ति बाँसवाड़ा के आर्थूणा में एक शिवालय में उत्कीर्ण है जिसका रचयिता विजय था।
- इस लेख से वागड़ के परमार शासकों के बारे में जानकारी मिलती है। इसके अनुसार वागड़ के परमार मालवा के परमार शासक कुँवरसिंह के वंशज थे।
- इसके अनुसार परमार शासक चामुण्डाराज ने अपने पिता मण्डलीक की स्मृति में आर्थूणा के महामण्डलेश्वर शिवालय का निर्माण करवाया था।
- इस प्रशस्ति में उस समय की द्रम, रूपक, विशोपक आदि मुद्राओं का उल्लेख मिलता है।

लूणवसही व नेमिनाथ मंदिर की प्रशस्ति :-

- 1230 ई. की यह प्रशस्ति माउण्ट आबू के देलवाड़ा के जैन मंदिरों में उत्कीर्ण है ।
- इस प्रशस्ति में आबू के परमार शासकों की वंशावली एवं उपलब्धियों तथा वस्तुपाल, तेजपाल के बारे में उल्लेख मिलता है।
- नेमिनाथ प्रशस्ति में आबू के शासक धारावर्ष का उल्लेख मिलता है। इसका रचयिता सोमेश्वर तथा उत्कीर्णकर्ता सूत्रधार चण्डेश्वर था।

रणकपुर प्रशस्ति :-

- 1439 ई. की यह प्रशस्ति रणकपुर के चौमुखा मंदिर में संस्कृत एवं नागरी दोनों भाषाओं में उत्कीर्ण है।
- इस प्रशस्ति में बापा एवं कालभोज को अलग-अलग व्यक्ति बताया गया है।
- इस प्रशस्ति से चित्तौड़ की सामाजिक, आर्थिक एवं धार्मिक जीवन के बारे में जानकारी मिलती है।
- इसमें महाराणा कुम्भा की विजयों का वर्णन करते हुए उसे न्यायप्रिय एवं प्रजापालक शासक बताया गया है।
- इसका प्रशस्तिकार देपाक (दीपा या देपा) था।
- इस प्रशस्ति में बापा से कुम्भा तक की वंशावली दी गई है जिसमें बापा को गुहिल का पिता माना गया है ।
- इस प्रशस्ति में गुहिल वंश का आदि पुरुष बापा रावल को बताया गया है।
- इस प्रशस्ति में नाणक शब्द का प्रयोग मुद्राओं के लिए किया गया है।

कुंभलगढ़ प्रशस्ति (1460 ई.):-

- यह प्रशस्ति कुंभलगढ़ से प्राप्त हुई है ।
- इसमें 1460 ई. के आसपास के मेवाड़ के इतिहास की जानकारी मिलती है ।
- यह 5 शिलाओं पर उत्कीर्ण थी जो कुंभश्याम मंदिर जिसे अब मामदेव मंदिर कहते हैं में लगाई हुई थी । इसमें 64 श्लोक (संस्कृत भाषा में देवनागरी लिपि में उत्कीर्ण)हैं । यह कुंभलगढ़ अभिलेख से भिन्न है ।
- इसमें भी गुहिल वंश के शासकों का वर्णन व उपलब्धियां वर्णित है ।
- इसमें उस समय की सामाजिक प्रथाओं, दास प्रथा, वर्ण व्यवस्था, शिक्षा, यज्ञ, आदि का उल्लेख है ।
- इसके रचियता महेश थे ।
- इस प्रशस्ति को अब उदयपुर संग्रहालय में रखा गया है ।

कीर्ति स्तंभ प्रशस्ति (1460 ई.) :-

- 1460 ई. की यह प्रशस्ति कीर्ति स्तंभ में कई शिलाओं पर उत्कीर्ण है जिसकी भाषा संस्कृत है । अब इसकी केवल केवल दो ही शिलाएँ उपलब्ध है ।
- एक शिला पर 1 से 28 तक के श्लोक और अन्य शिला पर 162 से 187 तक के श्लोक प्राप्य हैं ।
- इस प्रशस्ति में मेवाड़ शासक बापा से लेकर कुंभा तक का वंशक्रम तथा उनकी उपलब्धियों का उल्लेख व कुंभा की विजयों का विस्तृत वर्णन मिलता है।
- इस प्रशस्ति में इसके रचयिता महेश भट्ट का भी उल्लेख है।
- इसमें कुंभा द्वारा गुजरात एवं मालवा की सेना पर विजय के उपलक्ष में विजय स्तंभ का निर्माण करवाने का उल्लेख है।
- इसमें कुंभा द्वारा निर्मित मंदिरों तथा उनके निर्माणों की तिथियां अंकित है। कुंभा द्वारा बनवाये गये कुंभश्याम मंदिर की तुलना कैलाश पर्वत तथा सुमेरु पर्वत से की गई है।
- इस प्रशस्ति में कुंभा को दानगुरु, राजगुरु तथा शैलगुरु कहा गया है।
- यह प्रशस्ति 3 दिसम्बर, 1460 को कुंभा के समय उत्कीर्ण की गई।
- इस प्रशस्ति में कुंभा द्वारा रचित ग्रंथों का उल्लेख किया गया है।

एकलिंगजी के मंदिर के दक्षिण द्वार की प्रशस्ति :-

- यह प्रशस्ति महाराणा रायमल द्वारा 1488 ई. में मंदिर के जीर्णोद्धार के समय उत्कीर्ण करवाई गई थी ।
- इस प्रशस्ति में मेवाड़ के शासकों की वंशावली तथा उस समय के समाज के बारे में उल्लेख मिलता है।
- इस प्रशस्ति में बापा के संन्यास लेने का वर्णन भी है ।
- इस प्रशस्ति का रचयिता महेश भट्ट था।

नौलखा बावड़ी की प्रशस्ति (1587 ई.):-

- 1587 ई. की यह प्रशस्ति डूंगरपुर स्थित नौलखा बावड़ी पर उत्कीर्ण है।
- इस प्रशस्ति में डूंगरपुर महारावल आसकरण की **रानी प्रेमलदेवी** द्वारा नौलखा बावड़ी के निर्माण का उल्लेख है।
- इस प्रशस्ति से वागड़ के चौहान शासकों की वंशावली के बारे में जानकारी प्राप्त होती है।

जूनागढ़ प्रशस्ति :-

- 1594 ई. की यह प्रशस्ति संस्कृत भाषा में बीकानेर शासक रायसिंह द्वारा जूनागढ़ किले में उत्कीर्ण करवाई गई।
- इस प्रशस्ति में जूनागढ़ दुर्ग के निर्माण की तिथि अंकित है तथा इस दुर्ग का निर्माण मंत्री कर्मचंद्र की देखरेख में होने का उल्लेख है। यह प्रशस्ति महाराज रायसिंह द्वारा दुर्ग का निर्माण पूर्ण होने पर लगवाई गई थी ।
- इस प्रशस्ति का रचयिता **"जैता / जइता"** नामक जैन मुनि था।
- इस प्रशस्ति में बीकानेर शासक राव बीका से रायसिंह तक की वंशावली एवं उनकी उपलब्धियों का उल्लेख है।
- इस प्रशस्ति में रायसिंह को साहित्य एवं काव्य का ज्ञाता, विद्वानों का संरक्षक तथा एक अच्छा कवि बताया गया है।
- इस प्रशस्ति को 'राय प्रशस्ति' भी कहा जाता है।

जगन्नाथ राय प्रशस्ति :-

- 1652 ई. की यह प्रशस्ति उदयपुर के **"जगन्नाथराय मंदिर"** में काले पत्थर पर उत्कीर्ण की गई है।
- इस प्रशस्ति के रचयिता **कृष्णभट्ट** का भी विस्तृत वर्णन है ।
- इस प्रशस्ति में मेवाड़ शासक रावल बापा से महाराणा साँगा तक के शासकों की उपलब्धियाँ अंकित है।
- इसमें हल्दीघाटी का युद्ध तथा महाराणा जगतसिंह के काल का विस्तृत उल्लेख किया गया है।
- यह मंदिर गूगावत पंचोली कमल के पुत्र अर्जुन की निगरानी और भंगोरा गोत्र के सूत्रधार भाणा और उसके पुत्र मुकुन्द की अध्यक्षता में बनाई गई थी।

राज प्रशस्ति (1676 ई.) :-

- यह प्रशस्ति राजसमंद झील की नौ चौकी पाल पर ताकों में लगी 25 काली शिलाओं पर संस्कृत भाषा में उत्कीर्ण है।
- यह विश्व की सबसे बड़ी प्रशस्ति है जिसके रचयिता "रणछोड़ भट्ट तैलंग" थे।
- यह प्रशस्ति मेवाड़ शासक राजसिंह द्वारा 1676 ई. में स्थापित करवाई गई।
- इस प्रशस्ति में अकाल राहत कार्यों के तहत राजसमंद झील के निर्माण का उल्लेख है।
- इस प्रशस्ति में बापा रावल के लिए बाप्प शब्द का प्रयोग हुआ है । इस प्रशस्ति को राजसिंह प्रशस्ति महाकाव्य की संज्ञा दी गई है ।
- इस प्रशस्ति में बापा से लेकर राजसिंह तक के शासकों की वंशावली तथा उनकी उपलब्धियों का उल्लेख है।
- इस प्रशस्ति में हल्दीघाटी युद्ध, अमरसिंह द्वारा मुगलों से की गई संधि तथा राजसिंह की विजयों का वर्णन किया गया है।
- इस प्रशस्ति में कुल 25 सर्ग तथा 1106 श्लोक उत्कीर्ण है।
- इस प्रशस्ति में राजसिंह द्वारा किशनगढ़ की **राजकुमारी चारुमति** से विवाह, औरंगजेब के साथ उनके संबंध, उनकी मृत्यु तथा उनके उत्तराधिकारी जयसिंह द्वारा औरंगजेब के साथ संधि करने का विवरण मिलता है।

वैद्यनाथ मंदिर की प्रशस्ति :-

- 1719 ई. की यह प्रशस्ति पिछोला झील के निकट सीसारमा गाँव के वैद्यनाथ मंदिर में उत्कीर्ण की गई है जिसका रचयिता रूपभट्ट था।
- इसमें बापा के हारीत ऋषि की कृपा से राज्य प्राप्ति का उल्लेख है ।

अध्याय – 2

प्रागैतिहासिक स्थल (सभ्यताएं)

- **पाषाणकालीन सभ्यता**

1. बागौर (भीलवाड़ा)

प्रिय छात्रों किसी भी सभ्यता का विकास किसी नदी के किनारे होता है क्योंकि जल ही जीवन है जल की आवश्यकता खेती के लिए और अन्य उपयोगों के लिए की पड़ती है।

- इसी प्रकार भीलवाड़ा जिले की माण्डल तहसील में कोठारी नदी के तट पर स्थित इस पुरातात्विक स्थल का उत्खनन 1967-68 से 1969-70 की अवधि में राजस्थान राज्य पुरातत्व विभाग एवं दक्कन कॉलेज, पुणे के तत्त्वावधान में श्री वी.एन. मिश्र एवं डॉ. एल.एस. लेशनि के नेतृत्व में हुआ है
- यहाँ से मध्य पाषाणकालीन (Mesolithic) लघु पाषाण उपकरण व वस्तुएँ (Microliths) प्राप्त हुई हैं।
- बागौर के उत्खनन में प्राप्त प्रस्तर उपकरण काल विभाजन के क्रम से तीन चरणों में विभाजित किये गये हैं। प्रथम चरण 3000 वर्ष ईसा पूर्व से लेकर 2000 वर्ष ईसा पूर्व तक, द्वितीय चरण 2000 वर्ष ईसा पूर्व से 500 वर्ष ईसा पूर्व का एवं तृतीय चरण 500 वर्ष ईसा पूर्व से लेकर प्रथम ईस्वी सदी तक की मानव सभ्यता की कहानी कहता है ।
- इन पाषाण उपकरणों को **स्फटिक** (Quartz) एवं चर्ट पत्थरों से बनाया जाता था। इनमें मुख्यतः पृथुक (Flake), फलक (Blade) एवं अपखण्ड (Chip) बनाये जाते थे। ये उपकरण आकार में बहुत छोटे (लघु अश्म उपकरण- Microliths) थे।
- बागौर में उत्खनन में पाषाण उपकरणों के साथ-साथ एक मानव कंकाल भी प्राप्त हुआ है।
- यहाँ पाये गये लघु पाषणा उपकरणों में ब्लेड, छिद्रक, स्क्रेपर, बेधक एवं चांद्रिक आदि प्रमुख हैं।
- ये पाषाण उपकरण चर्ट, जैस्पर, चाल्डेसनी, एगेट, क्वार्टजाइट, फ्लिंट जैसे कीमती पत्थरों से बनाये जाते थे । ये आकार में बहुत छोटे आधे से पौने इंच के औजार थे ये छोटे उपकरण संभवतः किसी लकड़ी या हड्डी के बड़े टुकड़ों पर आगे लगा दिये जाते थे।
- इन्हें मछली पकड़ने, जंगली जानवरों का शिकार करने, छीलने, छेद करने आदि कार्यों में प्रयुक्त किया जाता था। इन उपकरणों से यहाँ के लोगों का मुख्य व्यवसाय आखेट करना एवं कंद-मूल फल एकत्रित करने की स्थिति पर प्रकाश पड़ता है।
- यहाँ के प्रारंभिक स्तरों पर घर या फर्श के अवशेष नहीं मिलना साबित करता है कि यहाँ का मानव घुमक्कड़ जीवन जीता होगा।
- बागौर में द्वितीय चरण के उत्खनन में केवल 5 ताम्र उपकरण मिले हैं, जिसमें एक सूई (10.5 सेमी लम्बी), एक कुन्ताग्र (Spearhead), एक त्रिभुजाकार शस्त्र, जिसमें दो छेद हैं, प्रमुख हैं ।
- इस चरण के उत्खनन में मकानों के अवशेष भी मिले हैं जिससे पुष्टि होती है कि इस समय मनुष्य ने एक स्थान पर स्थायी जीवन जीना प्रारम्भ कर दिया था।
- इस काल की प्राप्त हड्डियों में गाय, बैल, मृग, चीतल, बारहसिंघा, सूअर, गीदड़, कछुआ आदि के अवशेष मिले हैं।
- कुछ जली हुई हड्डियाँ व मांस के भुने जाने के प्रमाण मिलने से अनुमान है कि इस काल का मानव मांसाहारी भी था तथा कृषि करना सीख चुका था।
- उत्खनन के तृतीय चरण में हड्डियों के अवशेष बहुत कम होना स्पष्ट करता है कि इस काल (500 ई. पूर्व से ईसा की प्रथम सदी) में मानव संस्कृति में कृषि की प्रधानता हो गई थी ।
- **बागौर उत्खनन** में कुल **5 कंकाल** प्राप्त हुए हैं, जिनसे स्पष्ट होता है कि शव को दक्षिण पूर्व-उत्तर पश्चिम में लिटाया जाता था तथा उसकी टांगे मोड़ दी जाती थी।
- सभ्यता के तृतीय चरण में शव को उत्तर-दक्षिण में लिटाने एवं टांगे सीधी रखने के प्रमाण मिले हैं।
- शव को मोती के हार, ताँबे की लटकन, मृदभाण्ड, मांस आदि सहित दफनाया जाता था। खाद्य पदार्थ व पानी हाथ के पास रखे जाते थे तथा अन्य वस्तुएँ आगे-पीछे रखी जाती थी।
- तृतीय चरण के एक कंकाल पर ईंटों की दीवार भी मिली है, जो समाधि बनाने की द्योतक है। मिट्टी के बर्तन यहाँ के द्वितीय चरण एवं तृतीय चरण के उत्खनन में मिले हैं।
- द्वितीय चरण के मृदभाण्ड मटमैले रंग के, कुछ मोटे व जल्दी टूटने वाले थे। इनमें शरावतनें, तश्तरियाँ, कटोरे, लोटे, थालियाँ, तंग मुँह के घड़े व बोतलें

आदि मिली हैं। (ये मृद्भाण्ड रेखा वाले तो थे परन्तु इन पर अलंकरणों का अभाव था।

- ऊपर से लाल रंग लगा हुआ है। ये सभी हाथ से बने हुए हैं) (तृतीय चरण के मृद्भाण्ड पतले एवं टिकाऊ हैं तथा चाक से बने हुए हैं। इन पर रेखाओं के अवशेष मिले हैं, परन्तु अलंकरण बहुत कम मिले हैं।
- (आभूषण: बागौर सभ्यता में मोतियों के आभूषण तीनों स्तरों के उत्खनन में प्राप्त हुए हैं। हार तथा कान की लटकनों में मोती बहुतायत से प्रयुक्त किये जाते थे।
- ये मोती एगेट, इन्द्रगोप व काँच के बने होते थे। मकान : बागौर में मकानों के अवशेष द्वितीय एवं तृतीय चरण में प्राप्त हुए हैं। हार तथा कान की लटकनों में मोती बहुतायत से प्रयुक्त किये जाते थे। ये मोती एगेट, इन्द्रगोप व काँच के बने होते थे।)
- **मकान : बागौर में मकानों के अवशेष द्वितीय एवं तृतीय चरण** में प्राप्त हुए हैं। मकान पत्थर के बने हैं। फर्श में भी पत्थरों को समतल कर जमाया जाता था।
- बागौर में मध्यपाषाणकालीन पुरावशेषों के अलावा लौह युग के उपकरण भी प्राप्त हुए हैं। इस सभ्यता के प्रारंभिक निवासी आखेट कर अपना जीवन यापन करते थे। परवर्ती काल में वे पशुपालन करना सीख गये थे। बाद में उन्होंने कृषि कार्य भी सीख लिया था।

कांस्ययुगीन सभ्यताएं -

2. कालीबंगा की सभ्यता -

कालीबंगा की सभ्यता एक नदी के किनारे बसी हुई थी । नदी का नाम है - **सरस्वती नदी** । इसे **द्रृषनदी, मृतनदी, नटनदी** के नाम से भी जानते हैं।

यह सभ्यता हनुमानगढ़ जिले में विकसित हुई थी हनुमानगढ़ जिले में एक अन्य सभ्यता जिसे **पीलीबंगा** की सभ्यता कहते हैं विकसित हुई।

इस सभ्यता की खोज -

- इस सभ्यता की सबसे पहले जानकारी देने वाले एक पुरातत्ववेत्ता एवं भाषा शास्त्री एल.पी. टेस्सिटोरी थे। इन्होंने ही इस सभ्यता के बारे में सबसे पहले परिचय दिया लेकिन इस सभ्यता की तरफ किसी का पूर्णरूप से ध्यान नहीं था इसलिए इसकी खोज नहीं हो पाई।
- इस सभ्यता के खोजकर्ता **अमलानंद घोष** है। इन्होंने 1952 में सबसे पहले इस सभ्यता की खोज की थी।
- इनके बाद में इस सभ्यता की खोज दो अन्य व्यक्तियों के द्वारा भी की गई थी जो 1961 से 1969 तक चली थी।

1. **बृजवासीलाल (बी.बी. लाल)**
2. **बीके (बालकृष्ण) थापर**

इन्हीं दोनों ने इस सभ्यता की विस्तृत रूप से खोज की थी

एल.पी. टेस्सिटोरी के बारे में -

- ये इटली के के निवासी थे । इनका जन्म सन् 1887 में हुआ। और यह अप्रैल 1914 ईस्वी में भारत मुंबई आए । जुलाई 1914 में यह जयपुर (राजस्थान) आये । बीकानेर राज्य इनकी कर्म स्थली रहा है ।
- उस समय के तत्कालीन राजा महाराजा गंगा सिंह जी ने इन्हें अपने राज्य के सभी प्रकार के चारण साहित्य लिखने की जिम्मेदारी दी ।
- बीकानेर संग्रहालय भी इन्होंने ही बनवाया है ये एक भाषा शास्त्री एवं पुरातत्ववेत्ता थे उन्होंने राजस्थानी भाषा के दो प्रकार बताए थे।

1. पूर्वी राजस्थानी 2. पश्चिमी राजस्थानी

- इस सभ्यता का कालक्रम **कार्बन डेटिंग पद्धति** के अनुसार 2350 ईसा पूर्व से 1750 ईसा पूर्व माना जाता है।
- कालीबंगा शब्द "सिंधीभाषा" का एक शब्द है जिसका शाब्दिक अर्थ होता है - **"काले रंग की चूड़िया"**। इस स्थल से काले रंग की चूड़ियों के बहुत सारी ढेर प्राप्त हुए इसलिए इस सभ्यता को कालीबंगा सभ्यता नाम दिया गया।
- कालीबंगा की सभ्यता भारत की ऐसी पहली सभ्यता स्थल है जो **स्वतंत्रता के बाद खोजी** गई थी। यह एक **कांस्य युगीन सभ्यता** है।
- हनुमानगढ़ जिले से इस सभ्यता से संबंधित जो भी वस्तुएं प्राप्त हुई है उनको सुरक्षित रखने के लिए राजस्थान सरकार के द्वारा **1985-86 में**

- यहाँ पर अनाज का संग्रह करने के लिए गोरे कोठे का उपयोग किया जाता था, इसे बंकोर भी कहा जाता था । यह मिट्टी के बने होते थे इसलिए इन्हें **मृदभाण्ड** भी कहते हैं।
- यहाँ पर छह प्रकार की यूनानी मुद्राएँ तथा तीन मोहरे मिली है जो ताँबे से बनी थी। इनमें से एक यूनानी मुद्रा में **एक तरफ त्रिशूल** का चित्र बना है तथा दूसरी तरफ **यूनानी देवता अपोलो** का चित्र बना है। और किनारों पर **यूनानी भाषा** का उल्लेख है, इस मुद्रा का प्रमाण धूलकोट के टीले से मिलता है।
- इस सभ्यता के लोगों का प्रमुख उद्योग ताँबे से संबंधित था। ताँबे का उपयोग उपकरण बनाने, अस्त्र शस्त्र बनाने कुल्हाड़ी बनाने में किया करते थे।
- **तांबा को गलाने की भट्टी** इसी सभ्यता से मिली है।

नोट – प्रिय छात्रों ताँबे से निर्मित अस्त्र-शस्त्र, उपकरण, ताँबे की कुल्हाड़ी **"गणेश्वर सभ्यता"** से भी मिली हैं, लेकिन **ताँबे को गलाने** की भट्टी का प्रमाण **एकमात्र केवल आहड़ सभ्यता** से मिले हैं ।

- यहाँ पर एक बैल की आकृति की मूर्ति मिली है, जो कि **टेराकोटा पद्धति** से निर्मित है। इस मूर्ति को **बनासियल बुल** की संज्ञा दी जाती है।
- यहाँ के लोग अंतिम संस्कार शव को गाड़कर किया करते थे, और शव को गाड़ते समय उस व्यक्ति के आभूषण और कपड़ों को साथ में दफनाते थे । शव का सिर उत्तर दिशा में तथा पैर को दक्षिण दिशा में रखते थे। इस प्रकार का प्रमाण **केवल इसी सभ्यता** से मिलता है।
- इस आहड़ सभ्यता के लोग कृषि से परिचित थे इस बात का प्रमाण डॉक्टर गोपीनाथ शर्मा ने दिया । यहाँ पर दो फसलों का प्रमाण मिला है, 1. ज्वार 2. चावल
- यहाँ के लोग सिलाई से परिचित थे तथा कपड़ों पर रंग डालने का भी प्रयोग करते थे, अर्थात् यहाँ **रंगाई छपाई का** कार्य प्रचलन में था।
- यहाँ पर एक **चक्रकूप** पद्धति का प्रचलन था, जब घरों में पानी भर जाता था तब यहाँ के लोग एक गहरा गड्डा खोदते थे, और उसमें मिट्टी के घड़े को एक के ऊपर एक रखते थे जिसके कारण उसका पानी इन घड़ों के द्वारा सोख लिया जाता था। इस पद्धति को **चक्रकूप पद्धति** कहते थे।

4. बैराठ (जयपुर) :

- बैराठ जयपुर जिले में शाहपुरा उपखण्ड में बाण गंगा नदी के किनारे स्थित लौह युगीन स्थल है।
- बैराठ का प्राचीन नाम **"विराट नगर"** ' था। महाजनपद काल में यह **मत्स्य जनपद** की **राजधानी** था।
- यहाँ पर उत्खनन कार्य वर्ष **1936-37** में **दयाराम साहनी** द्वारा तथा **1962-63** में नीलरत्न बनर्जी तथा कैलाश नाथ दीक्षित द्वारा किया गया।
- वर्ष 1837 में कैप्टन बर्ट ने यहाँ से मौर्य सम्राट अशोक के भाब्रू शिलालेख की खोज की । वर्तमान में यह शिलालेख **कलकत्ता संग्रहालय** में सुरक्षित है।
- **भाब्रू शिलालेख** में सम्राट अशोक को मगध का राजा 'नाम से संबोधित किया गया है।
- भाब्रू शिलालेख के नीचे **बुद्ध, धम्म एवं संघ** लिखा हुआ है।
- बैराठ में **बीजक की पहाड़ी, भीम जी की डूंगरी** तथा **महादेव जी की डूंगरी** से उत्खनन कार्य किया गया ।
- यहाँ से मौर्य कालीन तथा इसके बाद के समय के अवशेष मिले है।
- यहाँ से **36 मुद्राएँ** प्राप्त हुई है, जिनमें 8 **पंचमार्क चाँदी** की तथा **28 इण्डो-ग्रीक** तथा यूनानी शासकों की है । **16 मुद्राएँ यूनानी शासक मिनेण्डर** की है।
- उत्तर भारतीय चमकीले मृदभाण्ड वाली संस्कृति का प्रतिनिधित्व करने वाले राजस्थान में सबसे महत्वपूर्ण प्राचीन स्थल **बैराठ** में है।
- वर्ष 1999 में बीजक की पहाड़ी से अशोक कालीन गोल बौद्ध मंदिर, स्तूप एवं बौद्ध मठ के अवशेष मिले हैं जो **हीनयान सम्प्रदाय** से संबंधित है ।
- बैराठ सभ्यता के लोगों का जीवन पूर्णतः ग्रामीण संस्कृति का था।
- बैराठ में पाषाण कालीन **हथियारों** के निर्माण का **एक बड़ा कारखाना** स्थित था ।
- यहाँ भवन निर्माण के लिए मिट्टी की बनाई ईंटों का प्रयोग अधिक किया जाता था।
- यहाँ पर **शुंग एवं कुषाण कालीन** अवशेष प्राप्त हुए हैं।

- ये सभी एक मृदभाण्ड में सूती कपड़े से बंधी मिली हैं।
- बैराठ सभ्यता के लोग **लौह धातु से परिचित** थे । यहाँ उत्खनन से लौहे के तीर तथा भाले प्राप्त हुए हैं ।
- माना जाता है कि **हूण शासक मिहिर** कुल ने बैराठ को नष्ट कर दिया ।
- **634 ई. में ह्वेनसांग विराट** नगर आया था तथा उसने यहाँ बौद्ध मठों की संख्या **8 बताई** है ।
- बैराठ से **'शंखलिपि'** के प्रमाण प्रचुर मात्रा में प्राप्त हुए हैं ।
- यहाँ से **मुग़ल काल में टकसाल** होने के प्रमाण मिलते है । यहाँ मुग़ल काल में ढाले गये सिक्कों पर **बैराठ अंकित'** मिलता है।
- यहाँ बनेड़ी, ब्रह्मकुण्ड तथा जीण गोर की पहाड़ियों से वृषभ, **हिरण तथा वनस्पति** का चित्रण प्राप्त होता है ।

5. गणेश्वर (सीकर):

- **सीकर जिले में नीम का थाना** स्थान से कुछ दूरी पर स्थित गणेश्वर नामक स्थान से उत्खनन में **ताम्र युगीन** उपकरण प्राप्त हुए हैं। यह स्थान काँतली नदी के किनारे स्थित है।
- गणेश्वर को **पूर्व हड़प्पा कालीन सभ्यता** माना जाता है। **(परीक्षा की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण)**
- गणेश्वर सभ्यता 2800 ईसा पूर्व में विकसित हुई थी।
- गणेश्वर को **"पुरातत्व का पुष्कर"** भी कहा जाता है।
- भारत में पहली बार किसी स्थान से इतनी मात्रा में ताम्र उपकरण प्राप्त हुए हैं ।
- गणेश्वर से **ताँबे का बाण** एवं **मछली पकड़ने का कांटा** प्राप्त हुआ है ।
- इन उपकरणों में तीर, भाले, सूइयां, कुल्हाड़ी, मछली पकड़ने के कांटे आदि शामिल है ।
- गणेश्वर को भारत में **'ताम्र युगीन सभ्यताओं की 'जननी '** कहा जाता है ।
- यहाँ पर उत्खनन कार्य **रत्न चंद्र अग्रवाल** द्वारा 1977 में तथा विस्तृत उत्खनन 1978-79 में **विजय कुमार द्वारा** करवाया गया ।
- गणेश्वर से उत्खनन में जो मृदभाण्ड प्राप्त हुए है उन्हें **कपिषवर्णी मृदपात्र** कहते हैं।
- गणेश्वर से **मिट्टी के छल्लेदार बर्तन** भी प्राप्त हुए हैं ।
- गणेश्वर से **काले एवं नीले रंग** से अलंकृत मृदपात्र मिले हैं ।
- गणेश्वर में बस्ती को बाढ़ से बचाने हेतु वृहदाकार पत्थर के बाँध बनाने के प्रमाण मिले हैं ।
- गणेश्वर में **ईंटों** के उपयाग के **प्रमाण नहीं** मिले हैं ।
- मिट्टी के छल्लेदार बर्तन केवल गणेश्वर में ही प्राप्त हुए हैं ।
- गणेश्वर सभ्यता के उत्खनन से **दोहरी पेचदार शिरेवाली ताम्र पिन** भी प्राप्त हुई है ।
- गणेश्वर सभ्यता के लोग गाय, बैल, बकरी, सुअर, कुत्ता, गधा आदि पालते थे ।
- गणेश्वर सभ्यता को **'ताम्र संचयी संस्कृति'** भी कहा जाता है ।

6. गिलूण्ड (राजसमंद) :

- यह ताम्र युगीन सभ्यता **राजसमंद जिले में बनास नदी के तट** पर स्थित है।
- **मोडियामगरी'** नामक टीले का संबंध गिलूण्ड सभ्यता से है।
- **वर्ष 1957-58 में बी. बी. लाल द्वारा** यहाँ पर **उत्खनन कार्य** करवाया गया।
- यहाँ पर **पक्की ईंटों के** प्रयोग के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं।
- यहाँ पर उत्खनन से **ताम्र युगीन सभ्यता** एवं बाद की सभ्यताओं के अवशेष मिले हैं।
- यहाँ पर आहड़ सभ्यता का प्रसार था तथा इसी के समय यहाँ मृदभाण्ड, मिट्टी की पशु आकृतियां आदि के चित्र मिले हैं।
- गिलूण्ड के मृदभाण्डों पर **ज्यामितीय चित्रांकन** के अलावा **प्राकृतिक चित्रांकन** भी किया गया है।
- गिलूण्ड में उच्च स्तरीय जमाव में क्रीम रंग एवं काले रंग से चित्रित पात्रों पर चिकतेदार हिरण प्रकाश में आए हैं।
- गिलूण्ड में लाल एवं काले रंग के **मृदभाण्ड** मिले हैं।

7. रंगमहल (हनुमानगढ़) :

- रंगमहल हनुमानगढ़ जिले में सरस्वती (वर्तमान में घग्घर) नदी के पास स्थित है ।
- यह **एक ताम्र युगीन सभ्यता** है ।

राजस्थान संस्कृत अकादमी	जयपुर
राजस्थान उर्दू अकादमी	जयपुर
राजस्थान सिंधी अकादमी	जयपुर
राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी	जयपुर
पंडित झाबरमल शोध संस्थान	जयपुर
राजस्थानी भाषा साहित्य एवं संस्कृति अकादमी	**बीकानेर**
सरदार म्यूजियम	जोधपुर

अध्याय – 4

प्रमुख राजवंशों के महत्वपूर्ण शासकों की राजनीतिक एवं सांस्कृतिक उपलब्धियां

गुर्जर प्रतिहार वंश

- गुर्जर प्रतिहारों ने लगभग 200 सालों तक अरब आक्रमणकारियों का प्रतिरोध किया ।
- डॉ. आर सी. मजूमदार के अनुसार-गुर्जर प्रतिहारों ने छठी से 11वीं शताब्दी तक अरब आक्रमणकारियों के लिए बाधक का कार्य किया ।
- जोधपुर के **बौक शिलालेख** के अनुसार गुर्जर प्रतिहारों का अधिवास मारवाड़ में लगभग 6वीं शताब्दी के द्वितीय चरण में हो चुका था ।
- 8वीं-10वीं शताब्दी में उत्तर भारत में मंदिर व स्थापत्य निर्माण शैली **महाभारत शैली / गुर्जर-प्रतिहार शैली** प्रचलित थी ।
- अग्निकुल के राजपूतों में सर्वाधिक प्रसिद्ध प्रतिहार वंश था, जो गुर्जरों की शाखा या गुर्जरात्रा प्रदेश से संबंधित होने के कारण इतिहास में **गुर्जर-प्रतिहार** के नाम से जाना गया ।
- गुर्जर प्रतिहारों का प्रभाव केन्द्र मारवाड़ था। गुर्जरात्रा प्रदेश में रहने के कारण प्रतिहार **गुर्जर प्रतिहार** कहलाए।
- गुर्जरात्रा प्रदेश की राजधानी **"भीनमाल (जालौर)"** थी । बाणभट्ट ने अपनी पुस्तक ' हर्षचरित ' में गुर्जरों का वर्णन किया है ।
- इस वंश की प्राचीनता बादामी के चालुक्य नरेश पुल्केशिन द्वितीय के ऐहोल अभिलेख में 'गुर्जर जाति' के **सर्वप्रथम** उल्लेख से मिलती है ।
- डॉ. आर. सी. मजूमदार के अनुसार-प्रतिहार शब्द का प्रयोग मण्डौर की प्रतिहार जाति के लिए हुआ है क्योंकि प्रतिहार अपने आप को लक्ष्मण जी का वंशज मानते थे ।
- चीनी यात्री ह्वेनसांग के यात्रा वृतांत (ग्रंथ) सियूकी में **कु-ची-लो (गुर्जर)** देश का उल्लेख करता है ।
- जिसकी राजधानी **पि-लो-मो-लो** (भीनमाल) में थी । अरबी यात्रियों ने गुर्जरों को **'जुर्ज'** भी कहा है ।

- ***अल मसूदी प्रतिहारों*** *को अल गुर्जर तथा प्रतिहार राजा को* ***'बोरा'*** *कहकर पुकारता है। भगवान लाल इन्द्रजी ने गुर्जरों को 'गुजर' माना है, जो गुजरात में रहने के कारण गुर्जर कहलाए ।*
- *देवली, राधनपुर तथा करडाह अभिलेखों में प्रतिहारों को गुर्जर प्रतिहार कहा गया है । डॉ. गौरीशंकर ओझा प्रतिहारों को क्षत्रिय मानते हैं । जॉर्ज केनेडी गुर्जर प्रतिहारों को* ***ईरानी मूल*** *के बताते हैं ।*
- ***मिस्टर जैक्सन*** *ने बम्बई गजेटियर में गुर्जरों को विदेशी माना है ।*
- *प्रतिहार राजवंश महामारू मंदिर निर्माण वास्तुशैली का संरक्षक था ।* ***कनिघंम*** *ने गुर्जर प्रतिहारों को कुषाणवंशी कहा है ।*
- *डॉ. भंडारकर ने गुर्जर प्रतिहारों को खिज्रों की संतान बताकर विदेशी साबित किया है।*
- *स्मिथ स्टेनफोनो ने गुर्जर प्रतिहारों को हूणवंशी कहा है ।*
- *भोज गुर्जर प्रतिहार वंश का शासक था ।*
- *भोज द्वितीय प्रतिहार राजा के काल में प्रसिद्ध ग्वालियर प्रशस्ति की रचना की गई।* ***मुहणोंत नैंणसी*** *(मारवाड़ रा परगना री विगत) के अनुसार-गुर्जर प्रतिहारों की कुल 26 शाखाएं थी इनमें से दो प्रमुख थी - मण्डोर व भीनमाल ।*
- *गुर्जर प्रतिहारों की कुल देवी चामुंडा माता थी ।*

भीनमाल शाखा (जालोर)

गुर्जर प्रतिहार वंश

गुर्जर प्रतिहार वंश *– प्रतिहार शब्द वास्तव में पदनाम है जिसका अर्थ द्वारपाल है। अभिलेखिक रूप से गुर्जर जाति का उल्लेख सर्वप्रथम चालुक्य शासक पुलकेशिन द्वितीय के एहोल अभिलेख में हुआ है।*

- *उत्तर-पश्चिम भारत में गुर्जर प्रतिहार वंश का शासन छठी से बारहवीं शताब्दी तक रहा।*
- *इतिहासकार रमेशचन्द्र मजूमदार ने गुर्जर प्रतिहार को छठी से बारहवीं शताब्दी तक अरब आक्रमणकारियों के लिए बाधक का काम करने वाला बताया है।*
- *गुर्जरात्रा (गुर्जर प्रदेश) के स्वामी होने के कारण प्रतिहारों को गुर्जर प्रतिहार कहा गया है।*
- *नीलगुण्ड, राधनपुर, देवली तथा करहाड़ के अभिलेखों में इन्हें गुर्जर कहा गया।*
- *मिहिरभोज के ग्वालियर अभिलेख में नागभट्ट को रामका प्रतिहार तथा विशुद्ध क्षत्रिय कहा गया है।*
- *अरब यात्रियों ने इनके लिए 'जुर्ज' शब्द का प्रयोग किया है। अलमसूदी ने गुर्जर प्रतिहारों को 'अल गुजर' तथा राजा को 'बोरा' कहा है।*
- *राजशेखर ने अपने ग्रंथ 'विद्वशालभंजिका' में प्रतिहार महेन्द्रपाल को रघुकुल तिलक (सूर्यवंशी) लिखा है।*
- *मुहणोत नैणसी ने प्रतिहारों की 26 शाखाओं का उल्लेख किया है।*
- *चीनी यात्री ह्वेनसांग ने अपने ग्रंथ 'सियूकी' में गुर्जर राज्य को 'कु-चे-लो' (गुर्जर) तथा इसकी राजधानी 'पीलोमोलो' (भीनमाल) बताया है।*
- *कवि पम्प ने अपने ग्रंथ पम्पभारत' में कन्नौज शासक महीपाल को गुर्जर राजा बताया है।*
- *कैनेडी ने प्रतिहारों को ईरानी मूल का बताया है।*
- *उद्योतन सूरी ने अपने ग्रंथ 'कुवलयमाला' में गुर्जर शब्द का प्रयोग एक जाति विशेष के रूप में किया है।*
- *डॉ. भंडारकर ने प्रतिहारा को विदेशी गुर्जर जाति की संतान माना है।*

मण्डोर के प्रतिहार

- *मण्डोर के प्रतिहार गुर्जर प्रतिहारों की 26 शाखाओं में से सबसे महत्त्वपूर्ण एवं प्राचीन मण्डोर के प्रतिहार थे।*
- *मण्डोर के प्रतिहार स्वयं को 'हरिश्चन्द्र नामक ब्राह्मण' (रोहिलद्धि)का वंशज बताते हैं।*
- *हरिश्चन्द्र के दो पत्नियां थी- एक ब्राह्मणी और दूसरी क्षत्राणी भद्रा। उसकी ब्राह्मणी पत्नी से उत्पन्न संतान प्रतिहार ब्राह्मण तथा क्षत्राणी भद्रा से उत्पन्न संतान क्षत्रिय प्रतिहार कहलाये।*
- *हरिश्चन्द्र की रानी भद्रा से चार पुत्र- भोगभट्ट, कद्दक, रज्जिल और दद्द उत्पन्न हुए।*
- *इन चारों ने मिलकर मण्डोर को जीता तथा यहाँ गुर्जर प्रतिहार वंश की स्थापना की।*
- *मण्डोर के प्रतिहारों की वंशावली हरिश्चन्द्र के तीसरे पुत्र रज्जिल से प्रारंभ होती है।*

रज्जिल

- *हरिश्चन्द्र के चार पुत्रों में से रज्जिल मण्डोर का शासक बना।*

नागभट्ट प्रथम

- यह रज्जिल का पौत्र था।
- इसने मेड़ता को अपनी राजधानी बनाया।

शीलुक

- शीलुक ने वल्ल मण्डल के शासक भाटी देवराज को हराकर अपने राज्य की सीमा का वल्ल तक विस्तार किया।

कक्क

- यह शीलुक का पौत्र था।
- इसने मुंगेर के युद्ध में पाल वंश के शासक धर्मपाल को पराजित किया।
- इसके दो पुत्र थे- बाउक तथा कक्कुक।

बाउक

- बाउक एक प्रतापी शासक था जिसने अपने शत्रु नन्दवल्लभ को मारकर भूअकूप पर अधिकार कर लिया।
- इसका 837 ई. का 'मण्डोर (जोधपुर) का शिलालेख' प्राप्त हुआ है जिसमें बाउक ने अपने वंश का वर्णन अंकित करवाया।
- बाउक ने मयूर नामक राजा को पराजित किया था।

कक्कुक

- बाउक के बाद उसका भाई कक्कुक मण्डोर का शासक बना।
- घटियाला से प्राप्त दाेनों शिलालेख कक्कुक के समय के हैं।
- इसने रोहिंसकूप (घटियाला) के निकट गावों में बाजार बनवाये तथा व्यापार में वृद्धि की।
- कक्कुक के द्वारा घटियाला तथा मण्डोर में जयस्तम्भ भी स्थापित करवाये गये।
- कालान्तर में मण्डोर के आस-पास के क्षेत्र पर चौहानों का अधिकार हो गया लेकिन मण्डोर प्रतिहारों की इन्दा शाखा के अधीन रहा।
- इन्दा प्रतिहारों ने राठौड़ चूँड़ा के साथ वैवाहिक संबंध स्थापित कर मण्डोर का क्षेत्र राठौड़ों को दहेज में दे दिया।
- इस घटना के साथ ही मण्डोर प्रतिहारों का राजनीतिकी इतिहास समाप्त हो गया।

जयभट्ट प्रथम

- जयभट्ट प्रथम दद्द प्रथम का पुत्र था। इसकी उपाधि 'वीतराग' थी।
- जयभट्ट प्रथम हर्षवर्धन के समकालीन था।
- संखेड़ा दानपत्रों से उसकी विजयों के बारे में जानकारी प्राप्त होती है।
- उमेता, ललुआ तथा बेगुमरा शिलालेखों के अनुसार जयभट्ट प्रथम ने वल्मी की सेना को काठियावाड़ प्रान्त में पराजित किया था।
- इसने कलचुरियों को भी पराजित किया था।

दद्द द्वितीय

- जयभट्ट प्रथम के बाद उसका पुत्र दद्द द्वितीय शासक बना, जिसकी उपाधि 'महाराजा प्रशांतराग' थी।
- बड़ौदा के संखेड़ा नामक स्थान से दद्द द्वितीय के दानपत्र प्राप्त हुए हैं जिनकी भाषा संस्कृत तथा लिपि ब्राह्मी है।
- दद्द द्वितीय के समय हर्षवर्धन ने वल्लभी के शासक ध्रुवसेन द्वितीय को पराजित किया।
- इस समय ध्रुवसेन द्वितीय ने दद्द द्वितीय के दरबार में शरण ली, जिसके बाद दद्द द्वितीय ने हर्षवर्धन से उसका राज्य वापस दिला दिया।
- इसका राज्य विस्तार उत्तर में माही से दक्षिण में कीम तक तथा पूर्व में मालवा व खानदेश से पश्चिम में समुद्र तक था।

जयभट्ट द्वितीय

- दद्द द्वितीय के बाद उसका पुत्र जयभट्ट द्वितीय शासक बना।
- यह चालुक्यों का सामन्त था।

दद्द तृतीय

- यह जयभट्ट द्वितीय का पुत्र था, जिसने पंचमहाशब्द तथा बहुसहाय नामक उपाधियाँ धारण की।
- इसने वल्मी के शासक शीलादित्य द्वितीय को पराजित किया था।

जयभट्ट चतुर्थ

- यह इस वंश का अन्तिम शासक था।
- इसने अरब आक्रमणकारियों को पराजित किया था।
- इस शाखा के गुर्जर प्रतिहारों के लिए सामंत या महासामंत शब्दों का प्रयोग मिलता है, जिससे यह सिद्ध होता है कि इन शासकों की स्वतंत्र सत्ता नहीं थी।

- महेन्द्रपाल प्रथम को '**रघुकुल तिलक** चूड़ामणि, निर्भयराज व निर्भय नरेन्द्र, महीशपाल तथा महेन्द्रायुध' आदि नामों से भी पुकारा गया ।
- **राजशेखर** ने कर्पूरमंजरी, प्रबंधकोष, बाल रामायण, बाल भारत (प्रचण्ड पाण्डव), विद्वशाल भंजिका नाम से नाटक व काव्यमीमांसा, हरविलास, भुवनकोष नामक काव्य ग्रंथों की रचना की राजशेखर ने अपनी पत्नी अवन्ति सुंदरी के कहने पर ही '**कर्पूरमंजरी**' की रचना की थी ।
- महेन्द्रपाल को '**निर्भय नरेश**' भी कहा गया है ।
- इतिहासकार जी. एन. पाठक ने अपने ग्रंथ ' उत्तर भारत का राजनेतिक इतिहास' में प्रतिहार शासक महेन्द्रपाल प्रथम को **हिंदु भारत का अतिंम महान हिंदू सम्राट** माना है।

महिपाल प्रथम (९१४-९४३ ई.)

- महिपाल ने भी राजशेखर को आश्रय दिया था । राजशेखर ने महिपाल प्रथम को 'आर्यवृत्त का महाराजाधिराज, रघुकुल मुक्तामणि व रघुकुल मुकुटमणि' के नाम से पुकारा ।
- राजशेखर ने महिपाल को बाल भारत नाटक में रघुवंश मुक्तामणि (रघुवंशरुपी मोतियों में मणि के समान) एवं आर्यवृत का महाराजाधिराज लिखा है । महिपाल को विनायकपाल एवं **हेरम्बपाल** के नाम से भी जाना जाता है ।
- महिपाल के समय **९१५ ई. में अरब यात्री अलमसूदी** भारत आया ।
- अलमसूदी ने गुर्जर-प्रतिहारों को अलगुर्जर व राजा को '**बोरा**' कहा ।
- महिपाल प्रथम के शासनकाल से प्रतिहारों का पतन शुरू हो गया

महेन्द्रपाल-द्वितीय (९४५-९४८ ई.)

- इसके बाद गुर्जर-प्रतिहारों में चार शासक हुए देवपाल (९४८-४९ ई.), विनायकपाल द्वितीय (९53-54 ई.), महीपाल द्वितीय (९55 ई.), विजयपाल द्वितीय (960 ई.) इनके समय गुर्जर-प्रतिहारों की अवनति हुई।

राज्यपाल :-

- प्रतिहार शासक राज्यपाल (राजपाल) के समय महमूद गजनवी ने कन्नौज पर 1018 ई. (12वां अभियान) में आक्रमण किया, जिससे डरकर राज्यपाल कन्नौज छोड़कर गंगा पार भाग गया ।

त्रिलोचनपाल :-

- राज्यपाल के बाद त्रिलोचनपाल प्रतिहारों का शासक बना ।
- जिसे **महमूद गजनवी ने 1019 ई.** में पराजित किया।

यशपाल :-

- प्रतिहार वंश का **अंतिम शासक यशपाल (1036 ई.)** था ।
- 11वीं शताब्दी में कन्नौज पर गहड़वाल वंश ने अपना अधिकार स्थापित कर लिया । इस प्रकार प्रतिहारों के साम्राज्य का 1093 ई. में पतन हो गया ।

मेवाड़ का इतिहास

- मेवाड़ का गुहिल वंश - मेवाड़ रियासत राजस्थान की **सबसे प्राचीन** रियासत है, इसे मेदपाट, प्राग्वाट, शिवि जनपद आदि उपनामों से जाना जाता है। मेवाड़ का गुहिल वंशी राजघराना **एकलिंगजी (शिव) का उपासक** था, इसी कारण मेवाड़ के शासक एकलिंगनाथजी को **स्वयं के राजा / ईष्टदेव** तथा **स्वयं को** एकलिंगनाथजी का **दीवान** मानते हैं। गुहिल वंश की कु**ल देवी बाण** माता है। मेवाड़ रियासत के सामन्त '**उमराव कहलाते** थे। मेवाड़ के महाराणा राजधानी छोड़ने से पहले एकलिंगजी से आज्ञा लेते थे, उसे '**आसकां**' कहते थे। मेवाड़ के महाराणा '**हिन्दुआ का सूरज**' कहलाते हैं क्योंकि वो स्वयं को सूर्यवंशी मानते हैं। गुहिल वंश के राजध्वज पर 'उगता सूरज एवं धनुष बाण अंकित है, तथा इसमें उदयपुर का **राजवाक्य** "जो दृढ़ राखै धर्म को, तिहिं राखै करतार" अंकित है। ये शब्द उनके स्वतंत्रता, प्रियता एवं धर्म पर दृढ रहने के संकेत देते हैं । मेवाड़ में 1877 में महाराणा के कोर्ट का नाम बदलकर '**इजलास खास**' कर दिया गया था।
- हूणों के पराभव के बाद राजस्थान में जिन क्षत्रिय (राजपूत) वंशों ने अपने राज्य स्थापित किये उनमें गुहिल वंशीय राजपूत प्रमुख हैं। **गौरीशंकर हीराचंद ओझा** ने इन्हें **विशुद्ध सूर्यवंशीय** क्षत्रिय माना है। मेवाड़ राजवंश की स्थापना ईसा की पाँचवी शताब्दी में **गुहिल नाम** के एक प्रतापी राजा ने की थी। भारत की आजादी के समय यह

विश्व का सबसे पुराना राजवंश था। लगभग 1400 वर्ष की अवधि में 75 शासकों की श्रृंखला ने निर्विघ्न रूप से मेवाड़ पर शासन किया। इस वंश ने शौर्य और पराक्रम की दुनिया में अपना नाम स्वर्ण अक्षरों में लिखा है।

मेवाड़ रियासत के प्रमुख शासको का कालक्रम निम्न प्रकार से हैं :-

गुहिल वंश (सिसोदिया) के शासक

राजा गुहिल का जीवन परिचय :-

- **विजयभूप** ने अपनी राजधानी को अयोध्या से वल्लभीनगर में स्थानांतरित किया। यहाँ इनका शासन सदियों तक रहा। विजयभूप की 6वीं पीढ़ी में **शिलादित्य** नामक व्यक्ति **वल्लभीनगर** का शासक बना। राजस्थान के आबू में उस समय **परमार वंश** का शासन था, जिनकी राजधानी **चंद्रावती** थी। परमारों की राजकुमारी पुष्पावती के साथ शिलादित्य का विवाह हो जाता है। पुष्पावती के छः पुत्रियाँ होती हैं लेकिन दोनों को एक पुत्र की चाह थी। अगली बार जब पुष्पावती गर्भवती होती है तो वह पुत्र प्राप्ति की मन्नत मांगने के लिए आबू के पास **अबुर्दा देवी मंदिर** चली जाती है। पुष्पावती के आबू जाने के बाद पीछे से वल्लभीनगर पर पड़ोसी राज्य ने आक्रमण कर दिया। इस आक्रमण में राजा शिलादित्य व बाकी परिवार के लोग मारे जाते हैं। शिलादित्य के एक सेवक ने आबू पहुंचकर रानी पुष्पावती को इस बात की सूचना दी। **पुष्पावती** ने अपने पति शिलादित्य की मृत्यु के दुख में सती होने का फैसला किया लेकिन गर्भावस्था में होने के कारण उनकी सखियों ने ऐसा करने से उन्हें रोक दिया। स्थिति ऐसी हो गई थी कि अब वह अपने मायके भी नहीं जा सकती थीं अतः उन्होंने अन्यत्र जाने का फैसला किया। रानी पुष्पावती अपनी सखियों व सेवक के साथ जंगल के रास्ते होते हुए कुछ दिनों बाद आबू व वल्लभीनगर के मध्य स्थित **वीरनगर** नामक स्थान पर पहुंची। यहाँ वह **कमलाबाई** नामक एक विधवा व निसंतान ब्राह्मणी के घर रहने लगीं। कुछ माह बाद पुष्पावती ने एक बच्चे को जन्म दिया जिसे वह कमलाबाई को सौंपकर स्वयं सती हो गई। ऐसा माना जाता है कि पुष्पावती ने बच्चे को गुफा में जन्म दिया था इसीलिए बच्चे का नाम **गुहिल** रख दिया गया। बच्चे का पालन-पोषण ब्राह्मणी ने ही किया था।
- बालक गुहिल बचपन से ही होनहार व साहसिक परवर्ती का था। भीलों के साथ उसके अच्छे संबंध थे। वह इन भील बालकों के साथ ही खेलता हुआ बड़ा हो गया। बड़ा होने पर उसे ब्राह्मणी द्वारा अपने वंश व अपने माँ-बाप के बारे में पता चला। गुहिल इसका प्रतिशोध लेने के उद्देश्य से वल्लभीनगर पहुँचा। लेकिन वहां उस समय तक उसके शत्रु का राज्य नष्ट हो चुका था। अतः गुहिल वल्लभीनगर से पुनः वीरनगर लौट आया। वीरनगर आने के बाद गुहिल ने मेवाड़ पर (ईडर के आसपास का क्षेत्र) आक्रमण करने का निश्चय किया। उस समय मेवाड़ पर मेद जाति का शासन था। गुहिल ने भीलों से प्रार्थना की कि वो मेवाड़ को जीतने में उसकी मदद करें। गुहिल ने उनसे वादा किया कि इस सहयोग के बदले में वह और उसके वंशज कभी भी भीलों से कर नहीं लेंगे, और ना ही कभी भीलों पर अत्याचार करेंगे। **566** ई. में गुहिल ने भीलों की मदद से मेदों को पराजित कर मेवाड़ पर अधिकार कर लिया।

बप्पारावल / बापा रावल (734 ई. 810 ई.)

- बप्पा रावल (713-810) मेवाड़ राज्य में गुहिल राजपूत राजवंश के संस्थापक राजा थे। **बप्पा रावल का जन्म** मेवाड़ के महाराजा गुहिल की मृत्यु के 191 वर्ष **713 ई.** में **ईडर** में हुआ। उनके पिता ईडर के शासक महेंद्र द्वितीय थे। बप्पा रावल गुहिल राजपूत राजवंश के वास्तविक संस्थापक थे (संस्थापक-गुहिलादित्य)। इसी राजवंश को **सिसोदिया** भी कहा जाता है, जिनमें आगे चलकर महान राजा राणा कुम्भा, राणा साँगा, महाराणा प्रताप हुए।
- भील समुदाय ने अरबों के खिलाफ युद्ध में बप्पा रावल का सहयोग किया। यदि बापा का राज्यकाल 30 साल का रखा जाए तो वह सन् **723** के लगभग गद्दी पर बैठा होगा। उससे पहले भी उसके वंश के कुछ प्रतापी राजा मेवाड़ में हो चुके थे, किन्तु बापा का व्यक्तित्व उन सबसे बढ़कर था। चित्तौड़ का मजबूत दुर्ग उस समय तक मोरी वंश के राजाओं के हाथ में था।

- परंपरा से यह प्रसिद्ध है कि हारीत ऋषि की कृपा से बापा ने मानमोरी को मारकर इस दुर्ग को हस्तगत किया। चित्तौड़ पर अधिकार करना कोई आसान काम न था। अनुमान है कि बापा की विशेष प्रसिद्धि अरबों से सफल युद्ध करने के कारण हुई । **सन् 712 ई.** में मुहम्मद कासिम से सिंध को जीता।
- **आदि वराह मंदिर** - यह मंदिर बप्पा रावल ने एकलिंग जी के मंदिर के पीछे बनवाया 735 ई. में हज्जात ने राजपूताने पर अपनी फौज भेजी । बप्पा रावल ने हज्जात की फौज को हज्जात के मुल्क तक खदेड़ दिया। बप्पा रावल की तकरीबन 100 पत्नियाँ थीं, जिनमें से 35 मुस्लिम शासकों की बेटियाँ थीं, जिन्हें इन शासकों ने बप्पा रावल के भय से उन्हें ब्याह दी । 738 ई. - अरब आक्रमणकारियों से युद्ध हुआ ये युद्ध वर्तमान राजस्थान की सीमा के भीतर हुआ बप्पा रावल, प्रतिहार शासक नागभट्ट प्रथम व चालुक्य शासक विक्रमादित्य द्वितीय की सम्मिलित सेना ने अल हकम बिन अलावा, तामीम बिन जैद अल उतबी व जुनैद बिन अब्दुल रहमान अल मुरी की सम्मिलित सेना को पराजित किया **बप्पा रावल ने सिंध** के **मुहम्मद बिन कासिम** को पराजित किया बप्पा रावल ने गज़नी के शासक सलीम को पराजित किया बप्पा रावल बप्पा या बापा वास्तव में व्यक्तिवाचक शब्द नहीं है, अपितु जिस तरह "बापू" शब्द महात्मा गांधी के लिए रूढ़ हो चुका है, उसी तरह आदरसूचक "बापा" शब्द भी मेवाड़ के एक नृपविशेष के लिए प्रयुक्त होता रहा है। सिसौदिया वंशी राजा कालभोज का ही दूसरा नाम बापा मानने में कुछ ऐतिहासिक असंगति नहीं होती। इसके प्रजासरंक्षण, देशरक्षण आदि कामों से प्रभावित होकर ही संभवत: जनता ने इसे बापा पदवी से विभूषित किया था। महाराणा कुंभा के समय में रचित एकलिंग महात्म्य में किसी प्राचीन ग्रंथ या प्रशस्ति के आधार पर बापा का समय संवत् 810 (सन् 753) ई. दिया है। एक दूसरे एकलिंग माहात्म्य से सिद्ध है कि यह बापा के राज्यत्याग का समय था।
- उन्होंने शासक बनने के बाद अपने वंश का नाम ग्रहण नहीं किया, बल्कि मेवाड़ वंश के नाम से नया राजवंश चलाया था, और **चित्तौड़ को अपनी राजधानी** बनाया । बप्पा रावल एक न्यायप्रिय शासक थे। वे राज्य को अपना नहीं मानते थे, बल्कि शिवजी के एक रूप **'एकलिंग जी'** को ही उसका असली शासक मानते थे और स्वयं उनके प्रतिनिधि के रूप में शासन चलाते थे। लगभग 20 वर्ष तक शासन करने के बाद उन्होंने वैराग्य ले लिया और अपने पुत्र को राज्य देकर शिव की उपासना में लग गये। महाराणा संग्राम सिंह (राणा साँगा), उदय सिंह और महाराणा प्रताप जैसे श्रेष्ठ और वीर शासक उनके ही वंश में उत्पन्न हुए थे।
- **बप्पा रावल के सिक्के** : गौरीशंकर हीराचंद ओझा ने अजमेर के **सोने के सिक्के को बप्पा रावल** का माना है। इस सिक्के का तोल 115 ग्रेन **(65 रत्ती)** है। इस सिक्के में सामने की ओर ऊपर के हिस्से में माला के नीचे श्री बोप्प लेख है, **बाईं ओर त्रिशूल है और उसकी दाहिनी तरफ वेदी पर शिवलिंग** बना है। इसके दाहिनी ओर नंदी शिवलिंग की ओर मुख किए बैठा है। शिवलिंग और नंदी के नीचे दंडवत् करते हुए एक पुरुष की आकृति है। सिक्के के पीछे की तरफ चमर, सूर्य, और छत्र के चिह्न हैं। इन सबके नीचे दाहिनी ओर मुख किए एक गौ खड़ी है और उसी के पास दूध पीता हुआ बछड़ा है। ये सब चिह्न बप्पा रावल की शिवभक्ति और उसके जीवन की कुछ घटनाओं से संबद्ध हैं। बप्पा रावल के बारे में कुछ तथ्य द्वारा बप्पा रावल को **कालभोजादित्य** के नाम से भी जाना जाता है इनके समय चित्तौड़ पर मौर्य शासक मान मोरी का राज था। 734 ई. में बप्पा रावल ने 20 वर्ष की आयु में मान मोरी को पराजित कर चित्तौड़ दुर्ग पर अधिकार किया। बप्पा रावल को **हारीत ऋषि** के द्वारा महादेव जी के दर्शन होने की बात मशहूर है।
- **एकलिंग जी का मंदिर** - उदयपुर के उत्तर में कैलाशपुरी में स्थित इस मंदिर का निर्माण 734 ई. में बप्पा रावल ने करवाया । इसके निकट हारीत ऋषि का आश्रम है।
- 753 ई. में बप्पा रावल ने 39 वर्ष की आयु में सन्यास लिया। इनका समाधि स्थान एकलिंगपुरी से उत्तर में एक मील दूर स्थित है। इस तरह इन्होंने कुल 19 वर्षों तक शासन किया। बप्पा रावल का देहान्त **नागदा** में हुआ, जहाँ इनकी समाधि स्थित है। शिलालेखों में वर्णन - **कुम्भलगढ़ प्रशस्ति** में बप्पा रावल को **विप्रवंशीय** बताया गया है आबू के शिलालेख में बप्पा रावल का वर्णन मिलता है कीर्ति स्तम्भ शिलालेख में भी बप्पा रावल का

- वास्तुमण्डन तथा वास्तुकार में वास्तुकला का वर्णन है।
- मण्डन के भाई का नाम नाथा तथा इनके ग्रंथ का नाम वास्तु मंजरी
- मण्डन के पुत्र का नाम गोविंद
- गोविंद के प्रमुख ग्रंथ – कलानिधि, उद्धार धारिणी, द्वारा दीपिका
- राणा कुंभा की हत्या 1468 ई. में मामादेव कुण्ड के पास कुंभलगढ़ (राजसमंद) में पुत्र ऊदा द्वारा की गई।
- इस लिए इतिहास में उदा को मेवाड़ का पितृहन्ता कहते हैं

Note – कर्नल जेम्स टॉड ने कहा – कुंभा में लाखा जैसी प्रेम कला एवं हम्मीर जैसी शक्ति थी। जिसने मेवाड़ के झंडे को घग्घर नदी के तट पर फहराया।

रायमल (1473-1509)

- राणा रायमल ने लगभग 36 वर्षों (1473-1509 ई.) तक शासन किया। किन्तु उसमें अपने पिता की भांति शूरवीरता एवं कूटनीतिज्ञता का अभाव था। परिणामस्वरूप मेवाड़ के कुछ अधीनस्थ क्षेत्र उसके हाथ से निकल गए। आबू, तारागढ़ और सांभर तो उदा के शासनकाल में ही मेवाड़ से अलग हो चुके थे।
- रायमल ने इन्हें पुनः अधिकृत करने का कोई प्रयास नहीं किया। अब मालवा के सुल्तान ने रणथम्भौर, टोडा और बूँदी को अपने अधिकार में कर लिया। टोडा के शासक राव सुरतान ने मेवाड़ में आश्रय इस आशा से लिया था कि शायद मेवाड़ से उसे सहायता मिल जाए। राव सुरतान के साथ उसकी पुत्री तारा भी थी, जो अद्वितीय सुंदर और वीरांगना थी। राव सुरतान ने प्रतिज्ञा कर रखी थी, कि वह अपनी पुत्री का विवाह उस शूरवीर से करेगा जो टोडा जीतकर उसे वापस दिलाएगा।
- राणा रायमल के द्वितीय पुत्र जयमल ने तारा की सुंदरता पर आसक्त होकर उससे विवाह करने की जिद की तथा राव सुरतान के साथ अत्यंत ही अशिष्ट व्यवहार किया। क्रुद्ध राव सुरतान ने जयमल को मौत के घाट उतार दिया और राणा को सूचित कर दिया। जयमल की मृत्यु के बाद रायमल के ज्येष्ठ पुत्र पृथ्वीराज ने तारा से विवाह करने का निश्चय कर टोडा पर आक्रमण कर जीत लिया।
- कुंवर पृथ्वीराज ने टोडा का राज्य राव सुरतान को सौंप दिया तथा वचनबद्ध राव सुरतान ने तारा का विवाह पृथ्वीराज से कर दिया। राणा रायमल का ज्येष्ठ पुत्र पृथ्वीराज था और जयमल दूसरा साँगा तीसरा पुत्र था। जयमल राव सुरतान के हाथों मारा गया तथा सिरोही लौटते समय रास्ते में अपने बहनोई द्वारा दिए गए विषाक्त लड्डू खाने से पृथ्वीराज की मृत्यु हो गई । इसी प्रकार रायमल के दो ज्येष्ठ पुत्रों का स्वर्गवास हो गया।

महाराणा साँगा (1509-1528)
या
राणा साँगा (1509-1528 ईस्वी)

- प्रारंभिक जीवन : राणा साँगा (महाराणा संग्राम सिंह) (राज 1509-1528) उदयपुर में सिसोदिया राजपूत राजवंश के राजा थे तथा राणा रायमल के सबसे छोटे पुत्र थे।
- मेवाड़ योद्धाओं की भूमि है, यहाँ कई शूरवीरों ने जन्म लिया और अपने कर्तव्य का प्रवाह किया । उन्हीं उत्कृष्ट मणियों में से एक थे राणा साँगा, साँगा का पूरा नाम महाराणा संग्राम सिंह था । वैसे तो मेवाड़ के हर राणा की तरह इनका पूरा जीवन भी युद्ध के इर्द-गिर्द ही बीता लेकिन इनकी कहानी थोड़ी अलग है । एक हाथ, एक आँख, और एक पैर के पूर्णतः क्षतिग्रस्त होने के बावजूद इन्होंने ज़िन्दगी से हार नहीं मानी और कई युद्ध लड़े।
- राणा साँगा अदम्य साहसी थे। इन्होंने सुल्तान मोहम्मद शासक माण्डु को युद्ध में हराने व बन्दी बनाने के बाद उन्हें उनका राज्य पुनः उदारता के साथ सौंप दिया, यह उनकी बहादुरी को दर्शाता है। बचपन से लगाकर मृत्यु तक इनका जीवन युद्धों में बीता। इतिहास में वर्णित है, कि महाराणा संग्राम सिंह की तलवार का वजन 20 किलो था ।
- राणा रायमल के तीनों पुत्रों (कुंवर पृथ्वीराज, जयमल तथा राणा साँगा) में मेवाड़ के सिंहासन के लिए संघर्ष प्रारंभ हो जाता है। एक भविष्यकर्ता के अनुसार साँगा को मेवाड़ का शासक बताया जाता है ऐसी स्थिति में कुंवर पृथ्वीराज व जयमल अपने भाई राणा साँगा को मौत के घाट उतारना चाहते थे, परन्तु साँगा किसी प्रकार यहाँ से बचकर अजमेर पलायन कर जाते हैं तब सन् 1509 में

अजमेर के कर्मचन्द पंवार की सहायता से राणा साँगा को मेवाड़ राज्य प्राप्त हुआ। महाराणा साँगा ने सभी राजपूत राज्यों को संगठित किया और सभी राजपूत राज्य को एक छत्र के नीचे लाएं। उन्होंने सभी राजपूत राज्यों से संधि की और इस प्रकार महाराणा साँगा ने अपना साम्राज्य उत्तर में पंजाब सतलज नदी से लेकर दक्षिण में मालवा को जीतकर नर्मदा नदी तक कर दिया। पश्चिम में सिंधु नदी से लेकर पूर्व में बयाना भरतपुर ग्वालियर तक अपना राज्य विस्तार किया इस प्रकार मुस्लिम सुल्तानों की डेढ़ सौ वर्ष की सत्ता के इतने बड़े क्षेत्रफल पर हिंदू साम्राज्य कायम हुआ इतने बड़े क्षेत्र वाला हिंदू सम्राज्य दक्षिण में विजयनगर समाज्य ही था। दिल्ली सुल्तान इब्राहिम लोदी को खातौली व बाड़ी के युद्ध में 2 बार परास्त किया और गुजरात के सुल्तान को हराया व मेवाड़ की तरफ बढ़ने से रोक दिया। बाबर को खानवा के युद्ध में पूरी तरह से राणा ने परास्त किया और बाबर से बयाना का दुर्ग जीत लिया। इस प्रकार राणा साँगा ने भारतीय इतिहास पर एक अमिट छाप छोड़ दी। राणा साँगा 16वीं शताब्दी के सबसे शक्तिशाली शासक थे, इनके शरीर पर 80 घाव थे। इनको हिंदुपत की उपाधि दी गयी थी। इतिहास में इनकी गिनती महानायक तथा वीर के रूप में की जाती है।

- महाराणा साँगा के पिता रायमल व माता **शृंगार देवी** थी।
- महाराणा साँगा का जन्म 12 अप्रैल, 1482 को हुआ तथा साँगा 1509 ई. में मेवाड़ का शासक बना तथा इनका राज्याभिषेक हुआ।
- महाराणा साँगा को हिन्दूपत व सैनिकों का भग्नावशेष (शरीर पर लगभग 80 घाव) नामों से जाना जाता है। - महाराणा साँगा राजस्थान का अंतिम हिन्दू राजा था, जिसके सेनापतित्व में पूरे राजपूतों ने मुगलों को भारत से बाहर निकालने का प्रयास किया।

<u>खतौली का युद्ध</u> - राणा साँगा ने 1517 में खातौली (बूँदी) के युद्ध में इब्राहिम लोदी को परास्त किया।

<u>बाड़ी का युद्ध</u> - राणा साँगा ने 1518 में बाड़ी (धौलपुर) के युद्ध में इब्राहिम लोदी को परास्त किया।

<u>गागरोन का युद्ध</u> - राणा साँगा ने 1519 में गागरोन के युद्ध (झालावाड़) में मालवा के महमूद खिलजी द्वितीय को पराजित किया।

<u>बयाना का युद्ध</u> - 16 फरवरी, 1527 ई. में हुये बयाना के युद्ध में साँगा के सैनिकों ने बाबर के सैनिकों (दुर्ग रक्षक बाबर का बहनोई मेहंदी ख्वाजा) को हराकर बयाना दुर्ग पर अधिकार कर लिया।

- **<u>खानवा का युद्ध</u>** - यह युद्ध राणा साँगा एवं बाबर के मध्य 17 मार्च, 1527 को लड़ा गया। खानवा के युद्ध में राणा साँगा बाबर से पराजित हो गया। खानवा के युद्ध (रुपवास-भरतपुर) में बाबर ने 'जिहाद/धर्म युद्ध का नारा दिया। इस युद्ध में साँगा ने **'पाती पेरवन** प्रथा का प्रयोग किया जिसके तहत इसमें राजस्थान के 7 राजा, 9 राव तथा 104 सामन्त शामिल हुए। बाबर ने इस युद्ध में **'तुलुगमा युद्ध** पद्धति का प्रयोग किया जिसमें उनकी सेना के पास तोपें एवं बंदूकें थी। युद्ध में साँगा के सिर पर एक तीर लगा जिससे साँगा घायल हो थे, उन्होंने अपना राजचिह्न एवं हाथी सादड़ी के झाला अज्जा को दे दिए एवं युद्ध का मैदान छोड़कर बसवा गांव (दौसा) पहुँच गए। बसवा (दौसा) में साँगा का चबूतरा बना हुआ है।
- साँगा को **कालपी (मध्यप्रदेश)** नामक स्थान पर साथियों ने जहर देकर 30 जनवरी, 1528 ई. को मार दिया।
- महाराणा साँगा का दाह संस्कार माण्डलगढ़ में किया गया, जहाँ इसकी छतरी बनी हुई है।
- महाराणा साँगा ने इब्राहीम लोदी के भाई **महमूद लोदी** व **हसन खाँ मेवाती** दो अफगानों को शरण दी थी।
- मेवाड़ के महाराणा साँगा ने प्रतिज्ञा ली थी, कि "जब तक वह अपने शत्रु को पराजित नहीं कर लेगा, तब तक चित्तौड़ के फाटक में प्रवेश नहीं करेगा"

<u>राणा विक्रमादित्य</u> :-

2. संधिकर्त्ता राज्य की रक्षा करने का दायित्व कम्पनी का होगा।
3. संधिकर्त्ता राज्य कम्पनी का आधिपत्य स्वीकार करेगा और कम्पनी सरकार के अधीन रहते हुए सदैव सहयोग प्रदान करेंगे।
4. ये राज्य अन्य किसी राज्य के साथ राजनीतिक सम्बन्ध नहीं रखेंगे और न ही किसी के साथ संधि व युद्ध करेंगे। यदि किसी पड़ौसी राज्य के साथ झगड़ा हो जाएगा, तो वे उसमें कम्पनी की मध्यस्थता स्वीकार करेंगे।
5. संधिकर्ता राज्यों के शासक व उनके उत्तराधिकारी अपने राज्य के स्वतंत्र शासक होंगे।
6. कम्पनी इन राज्यों के आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप नहीं करेगी।
7. जो राज्य पहले मराठों को खिराज देते थे, वे ही अब कम्पनी को खिराज देंगे।

कोटा राज्य के साथ संधि

26 दिसम्बर, 1817 को कोटा के मुख्य प्रशासक झाला जालिमसिंह एवं गवर्नर जनरल के विशेष प्रतिनिधि चार्ल्स मेटकॉफ के मध्य 1818 की संधि की गई । इस संधि में 11 धाराएँ थीं।

11वीं धारा में संधि पत्र पर हस्ताक्षर करने वालों के नाम हैं ।

संधि की शर्तें

1. कम्पनी सरकार व कोटा राज्य के मध्य पारस्परिक मित्रता एवं सद्भावना सदैव बनी रहेगी।
2. एक पक्ष का मित्र एवं शत्रु दूसरे पक्ष का भी मित्र एवं शत्रु होगा।
3. कम्पनी सरकार कोटा राज्य को सैनिक प्रदान करेगी एवं आवश्यकता पड़ने पर कोटा राज्य द्वारा कम्पनी सरकार को सैनिक सहायता प्रदान करेगा।
4. कोटा राज्य कम्पनी सरकार की अनुमति के बिना किसी अन्य शक्ति से युद्ध एवं मैत्री संधि नहीं करेगा।
5. कोटा महाराव एवं उसके उत्तराधिकारी किसी अन्य शक्ति से विवाद होने पर अंग्रेजों को मध्यस्थ बनाएंगे।
6. कोटा राज्य मराठों को जो खिराज देता था, वह अब कम्पनी सरकार को देगा।
7. कोटा के महाराव एवं उनके उत्तराधिकारी अपने राज्य के शासक बने रहेंगे। कम्पनी उनके आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप नहीं करेगी।
8. कोटा महाराव और उसके उत्तराधिकारी सदैव अंग्रेज सरकार की अधीनता में रहते हुए उसे सहयोग देते रहेंगे।

20 फरवरी, 1818 को झाला जालिमसिंह द्वारा अंग्रेजों से पूरक संधि कर दो नयी शर्तें जोड़ी गई।

राजस्थान में 1857 की क्रांति में हुए प्रमुख विद्रोह

- कर्नल जेम्स टॉड पहला व्यक्ति था जिसने राजस्थान का सर्वप्रथम सुव्यवस्थित इतिहास लिखा इसीलिए कर्नल जेम्स टॉड को राजस्थान के इतिहास का पिता कहा जाता है ।
- इतिहासकार गौरीशंकर हीराचंद ओझा ने कर्नल जेम्स टॉड के इतिहास लेखन की गलतियों को दूर किया इसीलिए गौरीशंकर हीराचंद ओझा को राजस्थान के इतिहास का वैज्ञानिक पिता कहा जाता है ।
- घोड़े वाले बाबा उपनाम से इतिहास में प्रसिद्ध कर्नल जेम्स टॉड के गुरु ज्ञानचंद थे । कर्नल जेम्स टॉड ने पृथ्वीराज रासो के लगभग 30000 हजार दोहो, का अंग्रेजी में अनुवाद किया था ।
- ब्रिटिश सरकार ने कर्नल जेम्स टॉड को 1818 से 1822 के मध्य पश्चिमी राजपूत राज्यों का पॉलिटिकल एजेंट नियुक्त किया जिसमें 6 रियासतें शामिल थी
- 1-कोटा 2- बूँदी 3-जोधपुर 4-उदयपुर 5-सिरोही 6-जैसलमेर
- 1857 के विद्रोह के संदर्भ में विभिन्न मत (Different views in reference to the revolt of 1857)
  - डॉ. रामविलास शर्मा- यह स्वतंत्रता संग्राम था ।
  - डॉ. रामविलास शर्मा– यह जनक्रांति थी ।
  - डिजरायली बेंजामिन डिजरैली – यह राष्ट्रीय विद्रोह था ।
  - वी. डी. सावरकर- यह स्वतंत्रता की पहली लड़ाई थी (पुस्तक द इंडियन वॉर ऑफ इंडिपेंडेंस) ।

- एस.एन. सेन- यह विद्रोह राष्ट्रीयता के अभाव में स्वतंत्रता संग्राम था ।
- सर जॉन लॉरेंस, के. मैलेसन, ट्रेविलियन, सीले- 1857 की क्रांति एक सिपाही विद्रोह था (इस विचार से भारतीय समकालीन लेखक मुंशी जीवनलाल दुर्गादास बंदोपाध्याय सैयद अहमद खाँ भी सहमत है ।)
- जवाहरलाल नेहरु - यह विद्रोह मुख्यतः सामन्तशाही विद्रोह था ।
- सर जेम्स आउट्रम और डब्लयू टेलर ने इसको - यह विद्रोह हिंदू-मुस्लिम का परिणाम था कहा है ।
- **क्रांति के प्रमुख कारण**
- देशी रियासतों के राजा मराठा व पिण्डारियों से छुटकारा पाना चाहते थे।
- लॉर्ड डलहौजी की राज्य विलय की नीतियाँ ।
- चर्बी लगे कारतुस का प्रयोग (एनफील्ड) ।
- 1857 के विद्रोह का प्रारंभ 29 मार्च 1857 को बैरकपुर छावनी (पश्चिम बंगाल) की 34वीं नेटिव इन्फेंट्री के सिपाही मंगल पांडे के विद्रोह के साथ हुआ किन्तु संगठित क्रांति 10 मई 1857 को मेरठ (उत्तर प्रदेश) छावनी से प्रारंभ हुई थी ।
- 1857 की क्रांति का तत्कालीन कारण चर्बी वाले कारतूस माने जाते हैं, जिनका प्रयोग एनफील्ड राइफल में किया जाता था । इस रायफल के बारे में भारतीय सैनिकों में अफवाह फैली की इनमें लगने वाले कारतूसों में गाय तथा सूअर की चर्बी लगी होती है ।
- कारतूस का प्रयोग करने से पूर्व उसके खोल को मुंह से उतरना पड़ता था जिससे हिंदू तथा मुस्लिमों का धर्म भ्रष्ट होता है । परिणाम स्वरुप 1857 का विद्रोह प्रारंभ हुआ ।
- 1857 की क्रांति के समय राजपूताना उत्तरी पश्चिमी सीमांत प्रांत के प्रशासनिक नियंत्रण में था जिसका मुख्यालय आगरा में था इस प्रांत का लेफ्टिनेंट गवर्नर कोलविन था ।
- अजमेर- मेरवाड़ा का प्रशासन कर्नल डिक्सन के हाथों में था क्रांति के समय राजपुताना का ए.जी.जी जॉर्ज पैट्रिक लॉरेंस था जिस का मुख्यालय माउंट आबू में स्थित था अजमेर राजपूताना की प्रशासनिक राजधानी था और अजमेर में ही अंग्रेजों का खजाना और शस्त्रागार स्थित था ।
- अजमेर की रक्षा की जिम्मेदारी 15वीं नेटिव इन्फैंट्री बटालियन के स्थान पर ब्यावर से बुलाई गई, लेफ्टिनेंट कारनेल के नेतृत्व वाली रेजिमेंट को दे दी गई मेरठ विद्रोह की खबर 19 मई 1857 को माउंट आबू पहुंची ।

इस क्रांति का प्रतीक चिह्न रोटी और कमल का फूल था

राजस्थान में क्रांति के समय पॉलिटिकल एजेंट (Rajasthan Political agent in evolution)

1. कोटा रियासत में - मेजर बर्टन
2. जोधपुर रियासत में - मेक मैसन
3. भरतपुर रियासत में - मोरिशन
4. जयपुर रियासत में – कर्नल ईडन
5. उदयपुर रियासत में - शावर्स और
6. सिरोही रियासत में - जे.डी.हॉल थे

राजस्थान में क्रांति के समय राजपूत शासक (Rajasthan Rajput ruler in revolution)–

- कोटा रियासत में - रामसिंह
- जोधपुर रियासत में - तख्तसिंह
- भरतपुर रियासत में - जसवंत सिंह
- उदयपुर रियासत में - स्वरूप सिंह
- जयपुर रियासत में - रामसिंह द्वितीय
- सिरोही रियासत में - शिव सिंह
- धौलपुर रियासत में - भगवंत सिंह
- बीकानेर रियासत में - सरदार सिंह
- करौली रियासत में - मदनपाल
- टोंक रियासत में - नवाब वजीरुद्दौला
- बूँदी रियासत में - रामसिंह
- अलवर रियासत में - विनयसिंह
- जैसलमेर रियासत में – रणजीत सिंह
- झालावाड रियासत में – पृथ्वीसिंह
- प्रतापगढ़ रियासत में – दलपत सिंह
- बाँसवाड़ा रियासत में - लक्ष्मण सिंह और
- डूंगरपुर रियासत में - उदयसिंह थे ।

राजस्थान में क्रांति के समय 6 सैनिक छावनियां थी जिनमें से खेरवाड़ा (उदयपुर) और ब्यावर (अजमेर) सैनिकों ने विद्रोह में भाग नहीं लिया था ।

सैनिक छावनियां (Military Encampment)

1. नसीराबाद (अजमेर)
2. नीमच (मध्य प्रदेश)
3. एरिनपुरा (पाली)
4. देवली (टोंक)
5. ब्यावर (अजमेर)
6. खेरवाड़ा (उदयपुर)

NOTE – खैरवाड़ा व ब्यावर सैनिक छावनीयों ने इस सैनिक विद्रोह में भाग नहीं लिया।

राजस्थान में 1857 की क्रांति का आरम्भ

- 1857 Revolution के समय भारत का गवर्नर जनरल " लॉर्ड केनिंग " था ।
- जब AGG जॉर्ज पैट्रिक लॉरेंस को मेरठ में सैनिक क्रांति की सूचना मिली तब वह माउन्ट आबू में था।
- AGG को मेरठ में क्रांति की सूचना 19 मई 1857 को मिली ।
- जॉर्ज पैट्रिक लॉरेंस ने अजमेर के मैगजीन दुर्ग में तैनात 15 वीं नेटिव इन्फेन्ट्री (NI) को नसीराबाद भेज दिया।
- मैगजीन दुर्ग में अंग्रेजों का शस्त्रागार तथा सरकारी खजाना रखा हुआ था।
- इस दुर्ग का नाम अकबर द्वारा रखा गया था।
- AGG ने देशी राजाओं को पत्र लिखकर 1817-1818 की सहायक संधियों का स्मरण कराया तथा क्रांति के दमन हेतु सहयोग माँगा ।
- 1857 की क्रांति के समय राजपूताना उत्तर-पश्चिम सीमा प्रान्त के प्रशासनिक नियंत्रण में था।
- उत्तर-पश्चिम सीमा प्रान्त का मुख्यालय आगरा में था और इस प्रान्त का लेफ्टिनेंट गवर्नर कोलवीन था।

नसीराबाद में क्रांति

- राजस्थान में 1857 की क्रांति का बिगुल नसीराबाद छावनी के सैनिकों ने बजाया।
- यहाँ अजमेर से अचानक भेजी गई 15 वीं नेटिव इन्फेंट्री के सैनिकों में असन्तोष व्याप्त हो गया था । इसके अतिरिक्त सरकार ने चर्बी वाले कारतूसों का विरोध होने के कारण इसके प्रयोग को बंद करने के आदेश दिए जिससे सैनिकों का संदेह और भी दृढ हो गया ।
- 30 वीं नेटिव इन्फेंट्री यहाँ पहले से ही तैनात थी।
- 28 मई 1857 को 15 वीं नेटिव इन्फेंट्री के सैनिकों ने विद्रोह कर अपने अधिकारी प्रिचार्ड का आदेश मानने से इंकार कर दिया।
- विद्रोही सैनिकों ने छावनी में मौजूद अंग्रेजों के मेजर स्पोटिस वुड तथा न्यूबरी की हत्या कर दी और दिल्ली कूच कर गए।
- बख्तावर सिंह द्वारा यहाँ विद्रोहियों का नेतृत्व किया गया।
- लेफ्टिनेंट माल्टर, व लेफ्टिनेंट हेथकोट के नेतृत्व में मेवाड़ के सैनिकों ने विद्रोहियों का पीछा किया लेकिन असफल रहे।

नीमच में क्रांति

- 2 जून 1857 को नीमच में कर्नल एबॉट ने हिन्दू व मुस्लिम सैनिकों को अंग्रेजों के प्रति वफादारी के लिए गीता व कुरान की शपथ दिलाई।
- अवध के एक सैनिक मोहम्मद अली बेग ने इसका विरोध किया ओर कर्नल एबॉट की हत्या कर दी।
- 3 जून 1857 को नीमच छावनी में क्रांति भड़क गई । यहाँ हीरालाल द्वारा नेतृत्व प्रदान किया गया।
- यहाँ मौजूद 40 अंग्रेजों ने भागकर डूंगला गाँव में रूंगाराम किसान के यहाँ शरण ली।
- मेवाड़ के सैनिक इन्हें उदयपुर ले गये जहाँ महाराणा स्वरूप सिंह ने इन्हें जगमंदिर पैलेस में ठहराया।
- राजस्थान में 1857 की क्रांति के दमन में अंग्रेजों का साथ देने वाला राजपूताने का पहला शासक मेवाड़ का स्वरूप सिंह था।
- नीमच के विद्रोही सैनिकों ने आगरा पहुँचकर वहाँ जेल में बन्द कैदियों को मुक्त कर दिया। विद्रोहियों ने आगरा के सरकारी खजाने से एक लाख छब्बीस हजार रुपये लूट लिये।
- नीमच के सैनिकों ने देवली छावनी होते हुए दिल्ली कूच किया।
- शाहपुरा के शासक लक्ष्मण सिंह ने नीमच के विद्रोही सैनिकों को सहायता व शरण दी।

एरिनपुरा में क्रांति

- राजस्थान में 1857 की क्रांति में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका एरिनपुरा छावनी के सैनिकों ने निभाई।

कला संस्कृति

अध्याय – 1

वास्तुकला की मुख्य विशेषताएँ -

- **किले और स्मारक (छतरियाँ)**

राजस्थान के प्रमुख किले (दुर्ग)

- राजा - महाराजाओं के रहने व उनका खजाना सुरक्षित रखने के लिए दुर्ग / गढ़ / किला का निर्माण किया जाता था जिसमें अनेक महीनों का राशन व पानी का भण्डारण होता था।
- दुर्ग में महल, शस्त्रागार, राजकीय आवास, सैनिक छावनियाँ , तालाब , कुण्ड छतरियाँ आदि होते थे।
- भारत में सर्वप्रथम दुर्ग के अवशेष सिन्धु घाटी सभ्यता से मिले हैं जिसमें नगर के दो भाग थे- (i) दुर्गीकृत (ii) अदुर्गीकृत दुर्ग
- भारत में सवाधिक दुर्ग महाराष्ट्र में जबकि राजस्थान का दुर्गों में तीसरा स्थान है।
- राजस्थान में सर्वाधिक दुर्ग जयपुर जिले में हैं ।
- दुर्गों का सर्वप्रथम वर्गीकरण मनुस्मृति में हुआ है। मनुस्मृति में छः प्रकार के दुर्ग बताये गये हैं इनमें गिरि दुर्ग सर्वश्रेष्ठ है।
- कौटिल्य के अर्थशास्त्र में राज्य के सप्तांग सिद्धांत में सबसे महत्वपूर्ण दुर्ग को बताया है।

- **शुक्र नीति के अनुसार 9 प्रकार के दुर्ग बताए गए जो निम्न है-**
- शुक्रनीति में सैन्य दुर्ग को सर्वश्रेष्ठ माना गया है।

(1.) एरन दुर्ग
- यह दुर्ग खाई, काँटों तथा कठोर पत्थरों से - निर्मित होता है।
- उदाहरण- रणथम्भौर दुर्ग, चित्तौड़ दुर्ग

(2.) धान्वन (मरुस्थल) दुर्ग
- ये दुर्ग चारों ओर रेत के ऊँचे टीलों से घिरे होते हैं।
- उदाहरण- जैसलमेर , बीकानेर व नागौर के दुर्ग ।

(3.) औदक दुर्ग (जलदुर्ग)
- ये दुर्ग चारों ओर पानी से घिरे होते है।
- उदाहरण- गागरोण का दुर्ग, भैंसरोड़गढ़ दुर्ग।

(4.) गिरि दुर्ग
- ये पर्वत एकांत में किसी पहाड़ी पर स्थित होता है तथा इसमे जल संचय का अच्छा प्रबंध होता है।
- उदाहरण- कुम्भलगढ़ , तारागढ़, जयगढ़, नाहरगढ़ (जयपुर), मेहरानगढ़ (जोधपुर)

(5.) सैन्य दुर्ग
- जो व्यूह रचना में चतुर वीरों से व्याप्त होने से अभेद्य हो।
- ये दुर्ग सर्वश्रेष्ठ समझे जाते है।

(6.) सहाय दुर्ग
- जिसमें वीर और सदा साथ देने वाले बंधुजन रहते हो।

(7.)वन दुर्ग
- जो चारों ओर वनों से ढका हुआ हो और कांटेदार वृक्ष हो।
- उदाहरण- सिवाना दुर्ग , त्रिभुवनगढ़ दुर्ग , रणथम्भौर दुर्ग।

(8.) पारिख दुर्ग
- वे दुर्ग जिनके चारों ओर बहुत बड़ी खाई हो।
- उदाहरण-लोहागढ़ दुर्ग , भरतपुर।

(9.) पारिध दुर्ग
- जिसके चारों ओर पत्थर तथा मिट्टी से बनी बड़ी - बड़ी दीवारों का सुदृढ़ परकोटा हो।
- उदाहरण-चित्तौड़गढ़ , कुम्भलगढ़ दुर्ग।

❖ राजस्थान का वह दुर्ग जिस पर सर्वाधिक विदेशी आक्रमण हुए -भटनेर (हनुमानगढ़)
❖ राजस्थान का वह दुर्ग जिस पर सर्वाधिक स्थानीय आक्रमण हुए-तारागढ़ (अजमेर)
❖ राजस्थान का सबसे बड़ा लिविंग फोर्ट- चित्तौड़ दुर्ग
❖ राजस्थान में सर्वाधिक बुर्जों वाला दुर्ग - सोनारगढ़ (जैसलमेर, कुल 99 बुर्ज)
❖ राजस्थान में अंग्रेजों द्वारा निर्मित दुर्ग -बोरासवाड़ा / टॉडगढ़ (अजमेर)
❖ राजस्थान का सबसे पुराना दुर्ग - भटनेर (हनुमानगढ़)
❖ राजस्थान का सबसे नवीन दुर्ग -मोहनगढ़ (जैसलमेर)

- वर्ष 2013 में यूनस्को की विश्व धरोहर सूची में राजस्थान के 6 दुर्ग शामिल किये - 1. चित्तौड़ 2. कुम्भलगढ़ (राजसमंद) 3. गागरोन (झालावाड़) 4. जैसलमेर 5. रणथम्भौर (सवाईमाधोपुर) 6. आमेर

❖ चितौड़गढ़ का किला

- **उपनाम-** चित्रकूट, राजस्थान का गौरव, दक्षिणी - पूर्वी द्वार, दुर्गों का दुर्ग, दुर्गों का सिरमौर, दुर्गों का तीर्थस्थल,
- इस किले का निर्माण चित्रांगद मौर्य ने किया था। (कुमारपाल प्रबन्ध के अनुसार)।
- राणा कुम्भा को इस दुर्ग का आधुनिक निर्माता माना जाता है।
- यह दुर्ग दिल्ली मालवा व गुजरात के रास्ते पर स्थित है जिसका सामरिक महत्त्व सर्वाधिक है।
- 734 ई. में बप्पा रावल ने मान मौर्य को हराकर चित्तौड़ के किले पर अधिकार कर लिया।
- 1559 ई. में उदयपुर की स्थापना तक चित्तौड़ मेवाड़ की राजधानी रहा है।
- अबुल फजल ने इस दुर्ग के बारे में कहा है " गढ़ तो चित्तौड़गढ़ बाकी सब गढैया। "
- इस दुर्ग को राजस्थान का दक्षिणी प्रवेश द्वार व मालवा का प्रदेश द्वारा कहते हैं।
- यह दुर्ग धान्वन दुर्ग को छोड़कर सभी श्रेणी में शामिल है।
- यह एकमात्र दुर्ग है जिसमें कृषि होती थी।
- यह दुर्ग गम्भीरी व बेड़च नदी के संगम पर स्थित राजस्थान का क्षेत्रफल में सबसे बड़ा दुर्ग है।
- यह राजस्थान का सबसे बड़ा आवासीय किला है।
- यह दुर्ग मेसा पठार पर स्थित है जिसकी आकृति व्हेल मछली के समान है।
- इस दुर्ग में प्रतिवर्ष चैत्र कृष्ण एकादशी को जौहर मेले का आयोजन किया जाता है।
- इस दुर्ग में स्थित प्रमुख जल स्रोतों में घी - तेल बावड़ी,कातण बावड़ी, जयमल - फत्ता तालाब, गौमुख कुण्ड, हाथीकुण्ड, सूर्यकुण्ड, भीमतल कुण्ड,रामकुंड व चित्रांगद मौरी तालाब प्रमुख है।
- **इस दुर्ग में राजस्थान में सर्वाधिक 3 साके हुए जो निम्न है-**

  प्रथम साका वर्ष 1303 ई. में हुआ जब रत्नसिंह व अलाउद्दीन के मध्य युद्ध हुआ जिसमें रत्नसिंह ने केसरिया तथा उसकी रानी ने पद्मिनी ने जौहर किया।

  द्वितीय साका वर्ष 1534-35 ई. में हुआ जब विक्रमादित्य के सेनापति बाघसिंह रावत व गुजरात के शासक बहादुरशाह के मध्य युद्ध हुआ जिसमें सेनापति बाघसिंह रावत के नेतृत्व में केसरिया तथा राणा सांगा की रानी कर्मावती के नेतृत्व में जौहर हुआ।

  तृतीय साका वर्ष1567-68 ई. में हुआ जब दिल्ली के बादशाह अकबर व राणा उदयसिंह के सेनापति जयमल राठौड़ व फत्ता सिसोदिया के मध्य युद्ध हुआ जिसमें सेनापति जयमल – फत्ता के नेतृत्व में केसरिया तथा गुलाब कंवर व फूल कंवर के नेतृत्व में जौहर हुआ।

- **इस दुर्ग में सात प्रवेश द्वार हैं-**

  1. पाडन पोळ / पावटन पोळ - यहाँ देवलिया के रावत बाघसिंह की छत्री है।
  2. भैरों पोळ - यहाँ कल्ला राठौड़ की 4 खम्भों तथा, जयमल राठौड़ की 16 खम्भों की छतरी है।
  3. हनुमान पोळ
  4. लक्ष्मण पोळ
  5. जोड़न पोळ
  6. त्रिपोलिया पोळ
  7. रामपोळ - यहाँ फत्ता सिसोदिया का स्मारक बना हुआ है।

❖ दुर्ग में स्थित दर्शनीय प्रमुख स्थल

- **कुम्भा द्वारा निर्मित-** कुम्भा स्वामी का मंदिर, श्रृंगार चंवरी का मंदिर, विजय स्तम्भ, कीर्ति स्तम्भ, चार दीवार, सात द्वार
- मोकल ने समिद्धेश्वर मंदिर का पुनर्निमाण करवाया।

INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

- बनवीर ने नवलखा भण्डार/ महल (यहाँ पर स्वामिभक्त पन्नाधाय ने अपने पुत्र चंदन का बलिदान दिया) व तुलजा भवानी का मंदिर बनवाया।
- इस दुर्ग में जयमल, फत्ता , कल्ला राठौड़, रैदास , बाघसिंह की छतरियाँ हैं ।
- दुर्ग में पद्मिनी महल, गौरा - बादल महल, पुरोहितों की हवेली, फतेहमहल, भामाशाह की हवेली, सलूम्बर हवेली, रामपुरा हवेली, आहाड़ा हिंगलू का महल, रतनसिंह महल, आल्हा काबरा की हवेली, राव रणमल की हवेली प्रमुख हैं।

❖ **विजय स्तम्भ**

- यह चित्तौड़ दुर्ग में स्थित इमारत है।
- ऊँचाई-122 फीट
- चौड़ाई 30 फुट है
- 9 मंजिला जिसका
- निर्माण 1440-48 ई.
- इसमें 157 सीढ़ियाँ
- निर्माण में 90 लाख का खर्चा
- शिल्पी जैता,नाथा, पामा, पूंजा
- तीसरी मंजिल पर 9 बार अरबी भाषा में अल्लाह लिखा
- इसकी 8वीं मंजिल पर कोई मूर्ति नहीं

- **विजय स्तम्भ के उपनाम**

- **विक्ट्री टावर,**
- **रोम के टार्जन के समान -फर्ग्युसन**
- **कुतुबमीनार से श्रेष्ठ - कर्नल जेम्स टॉड**
- **हिन्दू प्रतिमा शास्त्र की अनुपम निधि - आर. पी. व्यास**
- **संगीत की भव्य चित्रशाला – डॉ. सीमा राठौड़**
- **लोकजीवन का रंगमंच - गोपीनाथ शर्मा**

- **विष्णु ध्वज - उपेन्द्रनाथ डे कीर्ति**
- इसका निर्माण राणा कुम्भा ने सारंगपुर विजय (1437 ई.) के उपलक्ष में करवाया।
- इसके चारों ओर मूर्तियाँ होने के कारण इसे मूर्तियों का अजायबघर कहते हैं।
- यह राजस्थान की प्रथम इमारत है जिस पर 15 अगस्त, 1949 को एक रुपये का डाक टिकट जारी किया गया।
- यह राजस्थान पुलिस व माध्यमिक शिक्षा बोर्ड का प्रतीक चिह्न है। विनायक दामोदर सावरकर द्वारा स्थापित वर्ष 1904 ई. 'अभिनव भारत' का प्रतीक चिह्न भी विजय स्तम्भ ही था।
- इसकी 9 वीं मंजिल पर अत्रि - महेश ने मेवाड़ी भाषा में कीर्ति स्तम्भ प्रशस्ति की रचना की। जिसमें राणा कुम्भा की विजयों का वर्णन है।

❖ **कीर्ति स्तम्भ**

- इसका निर्माण 11-12वीं सदी में जैन व्यापारी जीजा ने करवाया।
- इसकी ऊँचाई 75 फीट तथा 7 मंजिला है।
- यह इमारत जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ / ऋषभदेव को समर्पित है।

❖ **गागरोण का किला**

- वर्तमान झालावाड़ जिले में काली सिंध एवं आहू नदियों के किनारे मुकन्दरा पहाड़ी पर सामेल नामक स्थान पर स्थित है।
- गागरोण का किला एक जलदुर्ग है।
- इसका निर्माण 12वीं सदी में डोड राजा विजलदेव परमार ने करवाया।
- इसे ' डोडगढ़ ' एवं 'धूलरगढ़' भी कहते हैं

लालगढ़ महल -

- इसका निर्माण महाराजा गंगासिंह ने अपने पिता लालसिंह की स्मृति में लाल पत्थरों से करवाया था।

कर्ण महल-

- इसका निर्माण महाराजा अनूपसिंह ने अपने पिता कर्णसिंह की स्मृति में करवाया।

तैंतीस करोड़ देवी - देवताओं का मंदिर है जिसमें सिंह पर सवार गणपति (हेरंब गणपति) की दुर्लभ प्रतिमा स्थित है।

जूनागढ़ दुर्ग में बने संग्रहालय में एक हजार वर्ष पुरानी सरस्वती की प्रतिमा दर्शनीय है।

❖ भटनेर का किला

- ➢ घग्घर नदी के किनारे स्थित इस दुर्ग का निर्माण 288 ई. में राजा भूपत भाटी ने करवाया।
- ➢ इस दुर्ग का प्रमुख शिल्पी कैकया था।
- ➢ यह राजस्थान का सबसे प्राचीन दुर्ग है।
- ➢ इस दुर्ग को उत्तरी सीमा का प्रहरी कहते हैं है।
- ➢ राजस्थान में सर्वाधिक विदेशी आक्रमण इस दुर्ग ने सहे हैं।
- ➢ इस दुर्ग का पुनः निर्माण 12वीं सदी में अभयराव भाटी ने करवाया था।
- ➢ वर्ष 1398 ई. में जब यहाँ के शासक दुलचन्द पर तैमूर लंग का आक्रमण हुआ उस समय मुस्लिम महिलाओं ने भी जौहर किया जो राजस्थान में एकमात्र था।
- ➢ तैमूर लंग अपनी आत्मकथा तुजुक - ए -तैमूरी में इस दुर्ग को अपने जीवन का सबसे मजबूत दुर्ग बताया था।
- ➢ 1805 ई. में मंगलवार के दिन बीकानेर के सूरतसिंह ने भटनेर शासक जाब्तासिंह भाटी को हराकर दुर्ग पर अधिकार कर इसका नाम हनुमानगढ़ कर दिया।
- ➢ रायसिंह के बेटे दलपत सिंह एवं उसकी पाँच रानियों के स्मारक बने हुए है। (दलपतसिंह ने अपने पिता रायसिंह के विरुद्ध भी विद्रोह किया था) इस दुर्ग में दिल्ली के सुल्तान बलबन के भाई शेर खां की कब्र है ।
- ➢ इसमें भद्रकाली माता का मंदिर, गुरु गोरखनाथ का मन्दिर बना हुआ है ।

❖ जालौर का किला

- ➢ इस दुर्ग का निर्माण प्रतिहार शासक नागभट्ट प्रथम ने 8वीं सदी में सूकड़ी नदी के किनारे करवाया (दशरथ शर्मा के अनुसार) था।
- ➢ हीराचंद ओझा के अनुसार इस दुर्ग का निर्माण 10वीं सदी में धारावर्ष परमार ने करवाया।
- ➢ यह दुर्ग कनकाचल / सोनगिरी पहाड़ी पर स्थित है।
- ➢ इस दुर्ग को सुवर्ण गिरी, कंचनगिरी, जाबालीपुर (जाबाली ऋषि की तपोभूमि होने के कारण) कहते हैं।
- ➢ कीर्तिपाल चौहान ने 1181 ई. में परमारों से यह दुर्ग छीना था।
- ➢ वर्ष 1311ई. में अलाउद्दीन खिलजी ने इस दुर्ग पर आक्रमण किया । इस समय यहाँ का शासक कान्हडदेव चौहान था। बीका दहिया के विश्वासघात के कारण दुर्ग के गुप्त रास्ते की जानकारी अलाउद्दीन खिलजी को लगी। गुप्त रास्ते की खोज के लिए राई का प्रयोग किया गया इस कारण जालौर के बाजार में रात को उच्च दामों पर राई खरीदी गई जिस कारण इस दुर्ग के बारे में एक कहावत प्रचलित है - राई रा भाव राते ही गिय्या।
- ➢ इसके बाद हुए युद्ध में कान्हड़देव चौहान के नेतृत्व में केसरिया तथा जैतलदे के नेतृत्व में जौहर हुआ। इस प्रकार जालौर का प्रथम साका हुआ तथा अलाउद्दीन ने जालौर का नाम जलालाबाद कर दिया।

अध्याय – 11

राजस्थान के धार्मिक आंदोलन प्रमुख

संत सम्प्रदाय

- प्रदेश में सर्वाधिक हिन्दू पाये जाते हैं, जो वैष्णव धर्म में आस्था रखते हैं ।
- यहाँ मुख्य रूप से वैष्णव, शैव व शाक्त मत के अनुयायी पाये जाते हैं ।
- ये मत ही अनेक सम्प्रदायों में बंटे है।
- राजस्थान में मुख्य रूप से दो सम्प्रदायों के लोग पाये जाते हैं –

1. सगुण सम्प्रदाय –

- इसमें ईश्वर को सर्वस्व मानकार ईश्वर के मूर्त रूप की पूजा – आराधना की जाती है ।
- इसमें रामानुज सम्प्रदाय, वल्लभ सम्प्रदाय, निर्बाक सम्प्रदाय, नाथ सम्प्रदाय, गौड़ीय सम्प्रदाय, पाशुपत सम्प्रदाय, चरणदासी सम्प्रदाय , मीरा दासी सम्प्रदाय, निष्कलंकी सम्प्रदाय मुख्य रूप से सम्मिलित है ।

2. निर्गुण सम्प्रदाय –

- इस मत के समर्थक ईश्वर को निराकार एवं निर्गुण परमसत्ता मानकर उसकी भक्ति करते है।
- ये निगुर्ण ब्रह्म की उपासना करते है, जो आत्मा व मूर्ति पूजा के विरोधी होते हैं ।
- निर्गुण भक्ति धारा में मुख्यतः - विश्नोई सम्प्रदाय, जसनाथी सम्प्रदाय, दादूपंथी सम्प्रदाय, रामस्नेही सम्प्रदाय, परनामी सम्प्रदाय, निरंजनी सम्प्रदाय, लालदासी सम्प्रदय, कबीर पंथी सम्प्रदाय आदि शामिल है ।

❖ **राजस्थान के प्रमुख सगुण भक्ति धारा के सम्प्रदाय**

❖ **मीरा बाई (मीरा दासी सम्प्रदाय)**

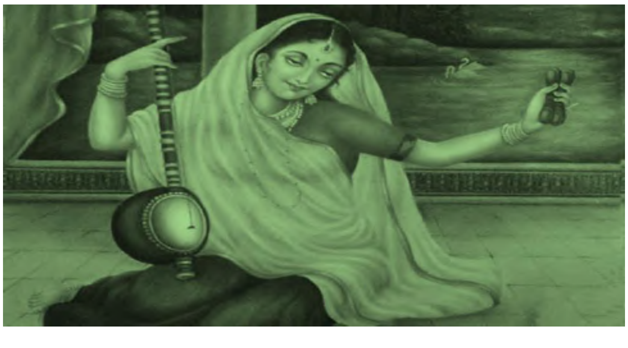

- मीरा का जन्म 1498 ई. मेड़ता रियासत के कुड़की ग्राम (वर्तमान पाली) में हुआ ।
- मीरा का जन्म का नाम प्रेमल था, इन्हें राजस्थान की राधा भी कहा जाता हैं ।
- माता का नाम वीर कंवरी तथा पिता का नाम रतनसिंह (राठौड़ वंशी बाजोली के जागीरदार थे) ।
- शिक्षक व धार्मिक गुरु गजाधर थे तथा इनके पुस्तैनी गुरु चम्पा जी थे तथा इनके संत गुरु रैदास थे एवं आध्यात्मिक गुरु इनके दादाजी राव दूदा थे।
- मीरा का विवाह 1516 ई. में राणा सांगा के ज्येष्ठ पुत्र भोजराज से हुआ था । विवाह के कुछ समय बाद ही खातौली के युद्ध (1518 ई) में भोजराज की मृत्यु हो गयी थी ।
- भोजराज कर्मवती हाड़ी के पुत्र थे ।
- विक्रमादित्य द्वारा मीरा को भिन्न-भिन्न प्रकार की यातनाऐं दी गई । जिससे वे वृन्दावन चली गई थी।
- द्वारिका (गुजरात) रणछोड़ जी की मूर्ति में सन् 1540 में लीन हो गई ।
- इन्होनें सगुण भक्ति पर जोर दिया तथ भक्ति का मार्ग भजन, नृत्य व कृष्ण स्मरण को बताया ।
- इनकी प्रमुख रचनाऐं - नरसी जी को मायरो (मीरा जी के दिशा-निर्देशन में रतना खाती द्वारा रचित) गीतगोविन्द टीका, रुकमणी मंगल नरसी मेहता री हुण्डी, पदावलियाँ आदि ।
- मीरा के दादा जी दूदा जी ने मीरा के लिए मेड़ता में आराध्य देव चारभुजा नाथ जी का मंदिर बनवाया व सांगा ने कुम्भश्याम मंदिर के पास कुंवरपदे महल बनवाया ।

❖ **संत गवरी बाई**

- गवरी बाई डूंगरपुर के नागर ब्राह्मण परिवार में जन्मी कृष्ण भक्त कवयित्री थी ।
- इन्हें बांगड़ की मीरा कहा जाता है। जो कृष्ण को पति के रूप में स्वीकार कर भक्ति करती थी ।
- डूंगरपुर के महाराज शिवसिंह ने इनके लिए बालमुकुंद मंदिर बनवाया ।

❖ **रामानन्दी सम्प्रदाय**

- यह वैष्णव सम्प्रदाय से सम्बन्धित हैं।
- इसके प्रवर्तक रामानन्द जी थे।
- इनके गुरु रामानुज आचार्य थे ।
- इन्होंने उत्तर भारत में वैष्णव भक्ति को प्रारंभ किया।
- कबीर, रैदास, धन्ना, पीपा इनके शिष्य रहे हैं।
- इस सम्प्रदाय की प्रमुख पीठे निम्न प्रकार हैं –

गलता जी

- ✓ यह इस सम्प्रदाय की प्रधान पीठ हैं।
- ✓ इसकी स्थापना कृष्णदास पयहारी के द्वारा की गई।
- ✓ पयहारी जी ने आमेर के शासक पृथ्वीराज की रानी बालाबाई के दीक्षागुरु थे।
- ✓ इन्होंने कापालिक सम्प्रदाय के योगी चतुरनाथ को शास्त्रार्थ में पराजित किया तथा गलता जी में रामानन्दी सम्प्रदाय की पीठ स्थापित की ।
- ✓ इसे जयपुर के महाराजा सवाई जयसिंह का समर्थन मिला ।
- ✓ इन्होंने अपने कवि कृष्ण भट्ट के द्वारा रामरासा नामक ग्रंथ लिखवाया ।

रैवासा

- ✓ इसकी स्थापना कृष्णदास के शिष्य अग्रदासजी ने सीकर के रैवास गाँव में की थी।
- ✓ यहाँ भगवान राम की भक्ति कृष्ण के समान मार्धुय भाव से की जाती हैं ।
- ✓ इसलिए अग्रदासजी के इस मत को रसिक सम्प्रदाय के नाम से जाना जाता हैं ।

❖ **निम्बार्क सम्प्रदाय**

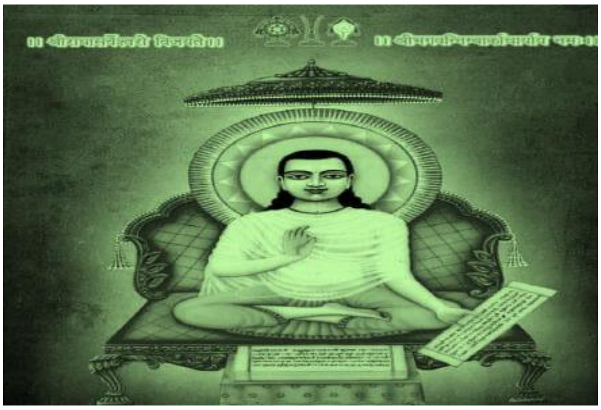

- इसे हंस सम्प्रदाय, सनकादिक सम्प्रदाय, नारद सम्प्रदाय भी कहा जाता हैं ।
- इसके संस्थापक निम्बार्काचार्य जी थे । जो तेलंगाना में ब्राह्मण परिवार में पैदा हुए ।
- इन्होंने वेदान्त परिजात ग्रंथ लिखा, जिसमें द्वैताद्वैत या भेदाभेद दर्शन का वर्णन हैं ।
- राधा - कृष्ण की युगल आराधना करना ।
- भारत में इसकी मुख्य पीठ वृन्दावन में स्थित हैं, राजस्थान में मुख्यपीठ अजमेर के किशनगढ़ के पास सलेमाबाद में स्थित हैं ।
- अन्य पीठे उदयपुर व जयपुर में भी हैं ।
- मारवाड़ में इसे नीमावत साध के नाम से जानते हैं।
- **सलेमाबाद पीठ की स्थापना** - परशुराम देवाचार्य जी द्वारा की गई । इन्होंने परशुराम सागर ग्रंथ लिखा । ये निम्बार्कचार्य के शिष्य थे ।

❖ **गौड़ीय सम्प्रदाय**

- इस सम्प्रदा के प्रवर्तक माधवाचार्य माने जाते हैं, इन्होने पूर्ण प्रज्ञ भाष्य नामक ग्रंथ की रचना की, जिसमें द्वैतवाद दर्शन प्रतिपादित किया ।
- यह सम्प्रदाय ब्रह्म सम्प्रदाय के नाम से जाने जाते थे, जिसका सर्वाधिक प्रचार-प्रसार गौड़ स्वामी ने किया था, इसलिए यह गौड़ीय सम्प्रदाय कहलाई ।
- इस सम्प्रदाय को चैतन्य महाप्रभु ने कृष्ण लीलाओं के माध्यम से जनजन तक पहुँचाया तथा बंगाल में वैष्णव वाद का जनक माना जाता हैं । इनका जन्म पश्चिम बंगाल में हुआ था ।
- चैतन्य प्रभू के शिष्य रुप गोस्वामी द्वारा राधा गोविन्द देवजी को राजस्थान में लाकर जयपुर के राजमहलों में प्रतिष्ठित किया गया ।
- जयपुर के महाराज मानसिंह इस सम्प्रदाय से बहुत प्रभावित थे, इन्होंने वृन्दावन में एक मंदिर का निर्माण करवाया तथा जयपुर में कनक घाटी में गोविन्द देव जी मूर्ति स्थापित कर कनक वृन्दावन नाम रखा । जिसे बाद में सवाई जयसिंह ने जयपुर में मंदिर बनवाकर वहाँ स्थापित करवा दिया । जो गौड़ीय सम्प्रदाय का प्रमुख केन्द्र हैं ।
- दूसरा केन्द्र मदनमोहन (करौली) है । इसका निर्माण गोपालसिंह ने 1748 ई. में करवाया ।
- इस सम्प्रदाय की एक शाखा सखी सम्प्रदाय के नाम से जानी जाती हैं, जिसकी स्थापना हरिदास जी ने की, जो कृष्ण को सखी मानकर पूजते थे ।

❖ **वल्लभ सम्प्रदाय**

अध्याय – 12

राजस्थान के लोक देवता एंव लोक देवियाँ

लोक देवी

➢ करणी माता

- करणी माता चारणों की कुलदेवी एवं बीकानेर के राठौड़ों की इष्ट देवी है।
- 'चूहों वाली देवी' के नाम से विख्यात है।
- जन्म सुआप गाँव (जोधपुर) के चारण परिवार में हुआ था।
- इनके बचपन का नाम रिद्धु बाई था।
- करणी माता का मंदिर को मठ कहलता है।
- मंदिर - देशनोक (बीकानेर)।
- करणी माता के मंदिर में पाए जाने वाले सफेद चूहों को **काबा** कहा जाता है।
- यहाँ सफेद चूहे के दर्शन करण जी के दर्शन माने जाते है।
- राव जोधा के समय मेहरानगढ़ दुर्ग की नींव करणी माता ने रखी।
- करणी माता की गायों का ग्वाला-दशरथ मेघवाल था।
- राव कान्हा ने इनकी गायों पर हमला किया ।
- महाराजा गंगासिंह ने इस मंदिर के लिए चांदी के किवाड़ भेंट किया ।
- करणी जी की इष्ट देवी 'तेमड़ा माता' हैं । करणी जी के मंदिर के पास तेमड़ाराय देवी का भी मंदिर है ।
- सफेदचील को करणी माता का रूप माना जाता है ।
- करणी जी के मठ के पुजारी चारण जाति के होते हैं।
- चैत्र एवं आश्विन माहकी नवरात्रि में मेला भरता है ।
- देशनोक बीकानेर में करणी माता के मंदिर की नींव स्वयं करणी माता ने रखी थी।
- करणी माता के इस मंदिर में दो कढ़ाई स्थित है, जिनके नाम - "**सावन-भादो कड़ाइयाँ**" हैं।

चरजा - चारण देवियों की स्तुति चरजा कहलाती है। जो दो प्रकार की होती है। 1. सिघाऊ - शांति/सुख के समय उपासना 2. घाडाऊ - विपत्ति के समय उपासना

➢ जीण माता

- चौहान वंश की आराध्य देवी ।
- ये धंधराय की पुत्री एवं हर्ष की बहन थी।
- मंदिर में इनकी अष्टभुजी प्रतिमा है।
- इनके इस मंदिर का निर्माण पृथ्वीराज चौहान प्रथम के समय राजा हट्ड़ द्वारा करवाया गया।
- जीणमाता की अष्टभुजा प्रतिमा एक बार में ढ़ाई प्याला मदिरा पान करती है ।
- इन्हें प्रतिदिन ढाई प्याला शराब पिलाई जाती है ।
- जीणमाता का मेला प्रतिवर्ष चैत्र और आश्विन माह के नवरात्रों में लगता है।
- जीणमाता तांत्रिक शक्तिपीठ है । इसकी अष्टभुजी प्रतिमा के सामने घी एवं तेल की दो अखण्ड ज्योति सदैव प्रज्वलित रहती हैं ।
- जीणमाता का गीत राजस्थानी लोक साहित्य में सबसे लम्बा है ।
- जीणमाता का अन्य नाम भ्रामरी देवी है ।

➢ कैला देवी

- करौली के यदुवंश (यादववंश) की कुल देवी ।
- इनकी आराधना में लागुरिया गीत गाये जाते हैं ।
- कैला देवी का लक्खी मेला प्रतिवर्ष चैत्र मास की शुक्ला अष्टमी को भरता है।
- कैला देवी मंदिर के सामने बोहरा की छतरी है ।

➢ **शिला देवी**

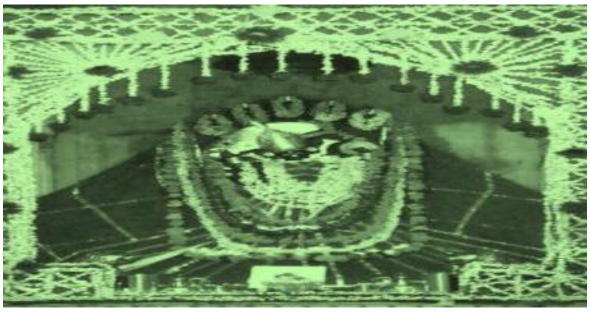

- जयपुर के कछवाहा वंश की आराध्यदेवी / कुलदेवी ।
- इनका मंदिर आमेर दुर्ग में है ।
- शिलामाता की यह मूर्ति पाल शैली में काले संगमरमर में निर्मित है ।
- आमेर के महाराजा मानसिंह प्रथम द्वारा पूर्वी बंगाल के राजा केदार को पराजित कर 'जस्सोर' नामक स्थान से अष्टभुजी भगवती की मूर्ति 16वीं शताब्दी में आमेर लाए थे।
- आमेर लाकर उन्होंने आमेर दुर्ग में स्थित जलेब चौक के दक्षिणी-पश्चिमी कोने में मंदिर बनवाया था।
- मान्यता है कि इस देवी की जहाँ पूजा होती है उसे कोई नहीं जीत सका ।

➢ **जमुवायमाता**

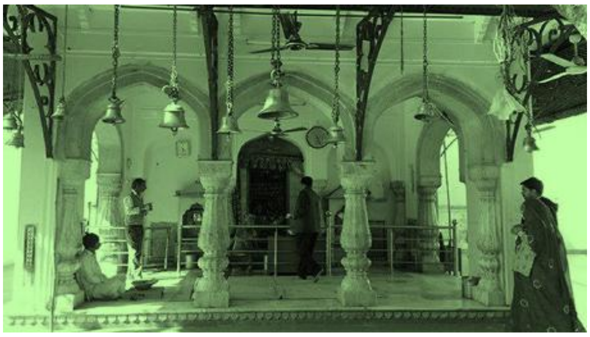

- ढूँढाड़ के कछवाहा राजवंश की कुलदेवी ।
- इनका मंदिर जमुवा रामगढ़, जयपुर में है।
- इस मंदिर का निर्माण कछवाहा वंश के दुलहराय द्वारा मंदिर का निर्माण करवाया गया।

➢ **आई माता**

- सिरवी जाति के क्षत्रियों की कुलदेवी है ।
- इनका मंदिर बिलाड़ा गाँव (जोधपुर) में है।
- इनके मंदिर को 'दरगाह' व थान को 'बड़ेर' कहा जाता है।
- ये रामदेवजी की शिष्या थी।
- इन्हें मानी देवी (नवदुर्गा) का अवतार माना जाता है।
- इनके मन्दिर में मूर्ति नहीं होती तथा जलने वाले दीपक की ज्योति से केसर टपकती रहती है । इनके मन्दिर का पूजारी दीवान कहलाता है ।

➢ **राणी सती**

- वास्तविक नाम 'नारायणी'।
- 'दादीजी' के नाम से लोक प्रिय।
- झुंझुनू में हर वर्ष भाद्रपद अमावस्या को मेला भरता है ।
- इन्होंने हिसार में मुस्लिम सैनिकों को मारकर अपने पति की मृत्यु का बदला लिया और स्वयं सती हो गयी ।
- राज्य सरकार ने 1988 में इस मेले पर प्रतिबंध लगा दिया क्योंकि 1987 में देवराला (सीकर) में "रूपकंवर" नामक राजपूत महिला सती हो गयी थी।

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से अन्य परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम देखने के लिए क्लिक करें -

RAS PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=p3_i-3qfDy8&t=1253s

Rajasthan CET Gradu. Level - https://youtu.be/gPqDNlc6UR0

Rajasthan CET 12th Level - https://youtu.be/oCa-CoTFu4A

RPSC EO / RO - https://youtu.be/b9PKjl4nSxE

VDO PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856WI8&t=202s

Patwari - https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=2s

PTI 3rd grade - https://www.youtube.com/watch?v=iA_MemKKgEk&t=5s

SSC GD – 2021 - https://youtu.be/2gzzfJyt6vI

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्नों की संख्या
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 प्रश्न आये
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)
SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
RPSC EO/RO	14 मई (1st Shift)	95 (120 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)
Raj. CET Graduation level	07 January 2023 (1st शिफ्ट)	96 (150 में से)
Raj. CET 12th level	04 February 2023 (1st शिफ्ट)	98 (150 में से)

& Many More Exams like UPSC, SSC, Bank Etc.

नोट्स खरीदने के लिए इन लिंक पर क्लिक करें

Whatsapp - https://wa.link/2iclos

Online order – https://bit.ly/asi-woman

Call करें - 9887809083

FREE SAMPLE